नमाज़

अच्छी बनाओ

मअ बीस सूरह

रूकूअ सजदा अच्छा हो	कौमा जलसा अच्छा हो	फराइज़
वाजिबात	सुन्नतें	नमाज़े जनाज़ा
वुज़ु का तरीका	गुस्ल का तरीका	नमाज़ का तरीका

मुअल्लिफ
हाफिज़ नूरुल्ला खाँ इब्ने अल्हाज हाफिज़ रूहुल्ला खाँ
इमाम व खतीब मस्जिद अबूबकर सिद्दीक (रदि.)
जलगांव खांदेश (मो.9823986512)

बेशक फलाह को पहोंच गए वह मोमिन
जो अपनी नमाज़ों में खुशु पैदा करने वाल

नमाज़ अच्छी बनाओ

मा बीस सुरह

रुकुअ सजदा अच्छा हो, कौमा जलसा अच्छा हो, कयाम कायदा अच्छा हो, फराइज़, वाजेबात, सुन्नतें, गुस्ल का तरीका, वजु का तरीका, नमाज़ का तरीका, पांच कलमे, मकरूहात, नमाज़े जनाज़ा, ईदैन का तरीका, कुरबानी का तरीका, सजदा तिलावत, सजदा सहु

मोअल्लिफ : हाफिज़ नुरुल्ला खाँ इब्ने अल्हाज
हाफिज़ रुहुल्ला खाँ , इमाम व खतीब मस्जिद
अबुबकर सिद्दीक,जलगांव खांदेश : ९८२३९८६५१२

खातमा होकर नमाज़ अच्छी बन सकती है, कहते हैं जिस की नमाज़ जानदार हो उसकी ज़िन्दगी शानदार होती है। हम ने मुखतलिफ़ और मुसतनद किताबों से मदद हासिल की है जैसे मसाएले नमाज़,तालीमुलइसलाम, हरदोई मौलाना अब्रारुलहक़ साहब का मसवदा बेहशती ज़ेवर वगैरा। अल्लाह पाक से दुआ है कि वह अपने फ़ज़ल से ज़र्रे को आफ़ताब बनाए और मेरी नजात का जरीआ बनाए। आमीन सुम्म आमीन ।

अहक़र नूरुल्लाह खान
(खादिमे मस्जिदे अबुबकर सिद्दीक़ रजि. जलगांव)

फेहरिस्त

2

तक़रीज़

अलहाफ़िज़ हज़रत मौलाना मुफ्ती ज़ियाउल्लाह साहब अलक़ासमी अलइशाअती

अलहम्दुलिल्लाह वहदहू वस्सलातु वस्सलामु अलन्नबीय्यीकरीम

अरबी का मिसरअ वन्नासु फ़ीमा याशिक़ून मज़ाहिब के इश्क़ के अन्दाज़ निराले होते हैं ऐसे ही हाफ़िज़ नूरुल्लाह साहब के वलवलाख़ेज़ इश्क़ का यह अन्दाज़ है कि उन्होंने अपनी जुंबिशे क़लम को दावत दी और बनाम नमाज़ अच्छी बनाओ, किताब लिखने की सई की और आसान और आम फ़हम अन्दाज़ में नमाज़ जैसी इबादत को समझाने की कोशिश की है, अहक़र ने इस को सबक़न सबक़न देखा है, दुआ है कि अल्लाह तआला मोअल्लिफ़ को

अज्रे अज़ीम अता फरमाए और मोअल्लिफ़ को दर्जाए कुबूलियत से नवाज़ें ।

फ़कत अहक़रुलइबाद
ज़ियाउल्लाह गफ़रलहू
खादिम मदरसा अनवारूल उलूम
महरुन, जलगांव

मेरी कामियाबी का राज़ ये है कि मैं हमेशा १५ मिनट पेहले अपने काम पर मौजूद रेहता हूं ।

लेना अगर हो तो माँ की दुआ लो, बचना अगर हो तो बाप की बद-दुआ से बचो।

नोट : हिंदी में अरबी अलफाज़ का सही तलफ्फुज़ अदा नही होता.इसलिए अरबी सिखें

पाँच कलमे तर्जुमे के साथ

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ ط

अव्वल कलिमा तय्यब : लाइलाहइल्ललल्लाहु मुहम्मदु र्रसुलुल्लाह ।

तर्जुमा : नहीं है कोई माअबूद सिवाए अल्लाह के, हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह तआला के रसूल हैं ।

أَشْهَدُ اَنْ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ
وَأَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ ط

दुव्वम कलिमा शहादत : अशहदु अल्लाइलाह इल्लल्लाहु व अशहदु अन्न मुहम्मदन अबदुहू व रसूलुहू ।

तर्जुमा : गवाही देता हूँ मैं यह कि नहीं है कोई

मअबूद सिवाए अल्लाह के और गवाही देता हूँ मैं कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह तआला के बन्दे और उस के रसूल हैं।

سُبْحَانَ اللهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَا اِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَاللهُ اَكْبَرُ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ

सुव्वम कलिमा तमजीद

सुब्हानल्लाहि वलहम्दु लिल्लाहि व लाइलाह इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर वला हवला वला कुव्वता इल्लाबिल्लाहिल अली यिलअज़ीम ।

तर्जुमा : पाक है अल्लाह हर ऐब से और तमाम तअरीफ़ अल्लाह ही के लिए है और अल्लाह के सिवा कोई मअबूद नहीं और अल्लाह बहुत बड़ा है और गुनाहों से बचने की और नेकी करने की ताक़त व कुव्वत किसी में नहीं है

सिवाए अल्लाह की तौफ़ीक़ से जो बहुत बुलंद अज़मत वाला है।

لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ يُحْيِيْ وَيُمِيْتُ بِيَدِهِ الْخَيْرُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ

चहारुम कलिमा तौहीद

लाइलाहा इल्लल्लाहु वहदहू ला शरीका लहू लहुल मुल्कु व लहुल हम्दु युहयी व युमीतु बियदिहिलखैर व हुवा अला कुल्लि शयइन क़दीर

तर्जुमा : नहीं है कोई मअबूद सिवाए अल्लाह के अकेला है वह उसका कोई शरीक नहीं उसी का है सारा मुल्क और उसी के लिए है तमाम तअरीफ़ें वह ही जिलाता है और वह ही मारता है उसी के हाथ में तमाम भलाई है और वह हर चीज़ पर क़ादिर है।

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ عَنْ اُشْرِكَ
بِكَ شَيْئًا وَّاَنَا اَعْلَمُ بِهٖ وَاَسْتَغْفِرُكَ لِمَا لَا اَعْلَمُ
بِهٖ تُبْتُ عَنْهُ وَتَبَرَّاْتُ مِنَ الْكُفْرِ وَالشِّرْكِ
وَالْكِذْبِ وَالْمَعَاصِیْ كُلِّهَا وَاَسْلَمْتُ وَاَقُوْلُ لَا
اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ ۝

पन्जुम कलिमा रद्दे कुफ्र

अल्लाहुम्मा इन्नी अऊजु बिका मिन अन उशरिका बिका शयऔंव्व अना अअलमु बिही वस्तग़फ़िरुका लिमाला अअलमु बिही तुबतु अन्हु व तबर्रअतु मिनलकुफ़्रे वशशिरकि वलकिज़बि वल मआसी कुल्लिहा असलमतु व अक़ूलु लाइलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुं रंसूलुल्लाह ।

तर्जुमा : अय अल्लाह मैं तेरी पनाह चाहता हूँ इस बात से कि शरीक बनाऊँ तेरा किसी को और मुझे इस का इल्म हो और मैं मआफ़ी मांगता हूँ तुझ से और तवबा करता हूँ उस गुनाह से

जिस को मैं नहीं जानता और बेज़ार हूँ मैं कुफ्र से शिर्क से और सब गुनाहों से और इसलाम लाया मैं और इक़रार करता हूँ कि नहीं है कोई मअबूद सिवाए अल्लाह के और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह के रसूल हैं ।

ईमाने मुजमल

آمَنْتُ بِاللّٰهِ كَمَا هُوَ بِاَسْمَآئِهٖ وَصِفَاتِهٖ وَقَبِلْتُ جَمِيْعَ اَحْكَامِهٖ ۝

आमन्तु बिल्लाहि कमा हुवा बिअसमाइही व सिफ़ातिही व क़बिलतु जमीआ अहकामिही ।

तर्जुमा : ईमान लाया मैं अल्लाह पर जैसा कि वह अपने नामों और सिफ़तों के साथ है और मैं ने उसके तमाम अहकाम कुबूल किये ।

ईमाने मुफ़स्सल

اٰمَنْتُ بِاللّٰهِ وَمَلٰئِكَتِهٖ وَ كُتُبِهٖ وَرُسُلِهٖ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَالْقَدْرِ خَيْرِهٖ وَشَرِّهٖ مِنَ اللّٰهِ تَعَالٰى وَالْبَعْثِ بَعْدَ الْمَوْتِ ٥

आमन्तु बिल्लाहि व मलाइकतिही व कुतूबिही व रुसूलिही वलयवमिल आखिरी वलकद्रि ख़ैरिही व शर्रीही मिनल्लाहि तआला वल बअसि बअदल मौत ।

तर्जुमा : ईमान लाया मैं अल्लाह पर और उसके फरिशतों पर और उसकी किताबों पर और उसके रसूलों पर और कयामत के दिन पर और इस बात पर कि अच्छी बुरी तक़दीर खुदाए तआला की तरफ़ से होती है और मौत के बाद उठाए जाने पर ।

आयतलकुर्सी तर्जुमे के साथ

اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَیُّ الْقَیُّوْمُ ج لَا تَاْخُذُهٗ سِنَةٌ
وَّلَا نَوْمٌ ط لَهٗ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَمَا فِی الْاَرْضِ مَنْ
ذَا الَّذِیْ یَشْفَعُ عِنْدَهٗ اِلَّا بِاِذْنِهٖ یَعْلَمُ مَا بَیْنَ
اَیْدِیْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا یُحِیْطُوْنَ بِشَیْءٍ مِّنْ
عِلْمِهٖ اِلَّا بِمَا شَآءَ وَسِعَ كُرْسِیُّهُ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضَ ط وَلَا یَئُوْدُهٗ حِفْظُهُمَا وَهُوَ الْعَلِیُّ الْعَظِیْمُ ط

अल्लाहु लाइलाहइल्लाहुवलहय्युलकय्यूम, ला ताख़ुज़ुहू सिनतुंव्वलानवम, लहू मा फ़िस्समावाति व मा फ़िलअर्ज़ि मन ज़ल्लज़ी यशफ़अु इन्दहू इल्ला बिइज़निहि याअलमु मा बैना ऐदीहिम व मा ख़लफ़हुम व ला युहीतूना बिशैइम मिन इलमिही इल्ला बिमा शाअ व सिअ कुर सिय्युहु स्समावाति वल अर्ज, व ला यऊदुहू हिफ़ज़ुहुमा

व हुवल अलिय्युल अज़ीम ।

तर्जुमा : अल्लाह पाक ऐसा है कि उस के सिवा कोई मअबूद नहीं वह हमेशा ज़िन्दा रहने वाला है, तमाम मख़लूक़ को संभालने वाला है ना उसको ऊँघ आती है और न नींद । जो कुछ आसमानों में और ज़मीन में है सब उसका है कौन है जो उस के पास किसी की सिफ़ारश कर सके बग़ैर उसकी इजाज़त के, वह जानता है उनके तमाम ग़ाएब व हाज़िर हालात को और वह उसकी मालूमात में से किसी भी चीज़ को अपने अहातए इलमी में नहीं ला सकते मगर जिस कदर वह इल्म देना चाहे उस की कुर्सी इतनी बडी है कि उस ने सब आसमान व ज़मीन को अपने अंदर ले रक्खा है और इन दोनों की हिफ़ाजत उस पर कुछ भी गिराँ नहीं है और वह बुलंद और अज़ीम है । (मौलाना युनुस पालनपूरी)

गुसल का तरीक़ा

गुसल में पहले अपने दोनों हाथ गट्टों तक अच्छा तरह से धोए फिर जहाँ जहाँ बदन पर नजासत या नापाकी लगी हो उस को धोएँ और पाक करें और इसतन्जे के मुकाम को भी अच्छी तरह धोकर पाक करें और गुसल की निय्यत इस तरह करें ।

نَوَيْتُ اَنْ اَغْتَسِلَ مِنْ غُسْلٍ لِرَفْعِ الْحَدَثِ

नवयतु अन अग़तसला मिन गुसलिन लिरफ़इल हदस , और अगर एहतेलाम का गुसल है तो यूँ कहे ,

نَوَيْتُ اَنْ اَغْتَسِلَ مِنْ غُسْلِ الْاِحْتِلَامِ لِرَفْعِ الْحَدَثِ

नवयतु अन अग़तसिला मिन गुसलिलइहतिलामि लिरफ़इल हदस , और अगर जनाबत का गुसल है तो यूँ कहे ,

نَوَيْتُ اَنْ اَغْتَسِلَ مِنْ غُسْلِ الْجَنَابَةِ لِرَفْعِ الْحَدَثِ

नवयतु अन अगतसिला मिन गसलिलजनाबति लिरफ़इल हदस , और अगर उर्दु में कहना चाहे तो भी दुरुस्त है, नहाने से पहले यूँ कहे निय्यत करता हूँ मैं गुसल की तमाम नापाकी व नजासतों से पाक होने के लिए फिर वुज़ू करे (आशिके इलाही) नापाक कपड़ा बदन से अलग करदे, अपने बदन पर पानी डाल कर अच्छी तरह से मले फिर दाएँ कन्धे पर पानी डाले फिर बाएँ कन्धे पर फिर सर पर पानी डाल कर जहाँ जहाँ बदन पर सूखा रह जाने का खतरा हो वहाँ हाथ से मल कर पानी बहा दे , इसी तरह दूसरी और तीसरी मर्तबा भी पानी सर से पाँऊं तक बहादे (दुर्रेमुख्तार) । गुसल में पानी न जियादा बहाए और न ही कम डाले । गुसल ऐसी जगह पर करें जहाँ किसी की नज़र न पडती हो, जैसे गुसल खाना वगैरा ।

नहाते वक्त अगर उंगली या बदन पर किसी भी तरह का ज़ेवर या अंगूठी वग़ैरा हो तो उसे भी घुमाकर उस के नीचे की जगहों को तर करले ताके पानी हर जगह पहुँच जाए। अब नमाज़ के लिए दुसरा वुज़ू करने की जरुरत नहीं है इसी वुज़ू से नमाज़ पढ़ी जा सकती है।

नोट : गुसल करते वक्त कलमा या और कोई दुआ वग़ैरा का पढ़ना या पढ़कर पानी पर दम करना बिलकुल जरुरी नहीं है, चाहे किसी भी किस्म का गुसल हो खास तौर पर औरतों में यह जिहालत आम है जिस का खत्म करना बेहद जरुरी है और हर एक के लिए गुसल के फ़राएज़ का जान्ना जरुरी है। औरतों में एक जिहालत यह भी है कि वह छिल्ला के गुसल के लिए लोटा या हन्डा भर कर गुसल के पानी पर दम करने के लिए किसी मौलाना या बांगी साहेबान के पास भेजती

हैं अब वह बेचारे पहले तो हैरतज़दा हो जाते हैं कि उस पर क्या पढ़कर दम करें । फ़िलहाल वह उन की तसल्ली के लिए होंट कुछ पढे या नहीं पढे दे देते हैं । अगर कोई मौलवी साहब उसपर किसी तरह की सूरत या दुआ वगैरा पढकर दम करके देदें तो उस दम किए हुए पानी को औरत अपने बदन पर डालेगी फिर वह पानी गन्दी नाली वगैरा में जाएगा यह कितनी बेअदबी की बात है । यह सब गलत रिवाज है जिसका तर्क करदेना जरूरी है और यह तमाम बातें दीनी बातों से दूरी और लाइल्मी का नतीजा हैं लिहाज़ा आज ही से तय करें कि दीन की बातें हम खुद भी सीखेंगे और अपनी औलाद को भी सिखाएँगे । गुसल के फराएज़ जाझा बेहद जरूरी है जिसके बगैर गुसल नहीं होता गुसल के फ़राएज़ अन्जाम देते हुए पूरे बदन को ऐसा तर करें कि कहीं पर भी बाल बराबर

4 जगह सूखी न रहे यही तरीक़ा तमाम किस्मों की नापाकी और नजासत से पाक होने का है। गुसल के तअल्लुक़ से बाक़ी की तफ़सीली मालूमात के लिए हज़रत मौलाना रफ़अत साहब की किताब मसाएलेगुसल, जलगांव में बिस्मिल्लाह बुक डेपो से हासिल करें।

मोबाइल नंबर: ९९६०२८३७६८

गुसल के फ़राएज़

(१) ग़रारा करना रोज़ा अगर रहा तो कुल्ली करना (२) नाक के नर्म हिस्से तक पानी पहुँचाना (३) पूरे बदन को इस तरह तर करना कि बाल बराबर भी जगह सूखी न रहे अगर बाल बराबर भी जगह सूखी रहेगी तो गुसल नहीं होगा

अगर बडा बचने की ख्वाहिश हो तो पेहले छोटा बनो।

गुसल की सुन्नतें

गुसल की पाँच (५) सुन्नतें हैं। (१) दोनों हाथ गट्टों तक घोना (२) इस्तन्जा करना और बदन के जिस हिस्से पर नजासत लगी हुई हो उसे धोना (३) नापाकी दूर और पाकी हासिल करने की निय्यत करना (४) पहले वुजू करना (५) तमाम बदन पर ३ बार पानी बहाना। (तालीमुलइसलाम)

वुज़ू का तरीक़ा

सब से पहले अऊज़ोबिल्लाह, बिस्मिल्लाह पढकर ३ बार गट्टों तक दोनों हाथ धोएँ फिर ३ मर्तबा कुल्ली करें, मिसवाक करें, मिसवाक न हो तो उंगली से दाँत साफ करें अगर रोज़ा न हो तो ग़रारा भी करलें तो बेहतर है ताके मुँह अच्छी तरह साफ़ हो जाए फिर ३ मर्तबा नाक में पानी

डाल कर बाएँ हाथ की करउंगली से नाक साफ करके फिर ३ मर्तबा पूरा चेहरा धोएँ । भंवों के उपर नीचे और पेशानी के बालों से ठूडी के नीचे तक इधर उधर दोनों कानों तक मुँह धोना चाहिए फिर ३ बार सीधा हाथ कोहनियों समेत धोएँ उस के बाद बाएँहाथ को ३ बार कोहनियों समेत धोएँ और फिर एक बार पूरे सर का मसह करें ।

तरीक़ए मसह

दोनों हाथ पानी से तर करके (भिगोकर) दोनों हाथों की ३-३ उंगलियों को मिलालें अलावा शहादत की उंगली और अंगोठे के पेशानी के पास से ऊपर की जानिब गर्दन तक ले जाएँ फिर शहादत की उंगली से कान का मसह करें और अंगूठा कान की पुश्त की तरफ फेरें और हथेली की करवट सिर्फ गर्दन पर पीछे घुमाएँ । दाएँ बाएँ न ले जाएँ

गर्दन का मसह करें और मसह सिर्फ एक ही बार करें, ३-३ बार करने की जरुरत नहीं फिर ३ बार पहले सीधा पैर टख़्नों समेंत धोएँ फिर उलटा पैर टख़नों समेत३ बार धोएँ। मुकम्मल वुज़ू हो गया वूज़ू के बाद कलमए शहादत पढ़ें।वुज़ू के तअल्लुक से और भी तफ़सीलात जान्ने के लिए जलगांव बिस्मिल्लाह डेपो से हासिल करके मौलाना रफअत कासमी की किताब मसाएले वुज़ू का मुतालआ करें।

वुज़ू के फ़राएज़

वुज़ू के चार (४) फ़र्ज़ हैं। (१) चेहरा धोना, पेशानी के बालों से लेकर ठूडी के नीचे तक एक कान की लव से लेकर दुसरे कान की लव तक पूरा चेहरा धोना (२) दोनों हाथ कोहनियों समेत धोना (३) चौथाई सर का मसह करना (४) दोनों पैर टख़नों

समेंत धोना ।

नोट : अगर इस में एक भी रुक्न भूल से छूट गया या सही तरीके से अदा न हुवा तो वुज़ू ही नहीं हुवाइस लिए यह चारों अरकान फर्ज़ हैं ।

वुज़ू की सुन्नतें

वुज़ू की १३ सुन्नतें हैं । (१) निय्यत करना (२) बिस्मिल्लाह पढना (३) पहले तीन बार गट्टों तक दोनों हाथ धोना (४) मिसवाक करना (५) ३ बार कुल्ली करना (६) ३ बार नाक में पानी डालना (७) दाढी का खिलाल करना (८) हाथ पाऊँ की उंगलियों का खिलाल करना (९) हर अज़ू को तीन बार धोना (१०) एक बार पूरे सर का मसह करना (११) दोनों कानों का मसह करना (१२) तर्तीब से वुज़ू करना (१३) पय दर पय वुज़ू करना यानी एक अज़ू सूखने न पाए कि दूसरा धो डाले ।

नोट : अगर इस में कोई भी रुक्न छूट जाए तो वुज़ू तो हो जाएगा मगर नाकिस होगा । इसलिए कि यह सब सुन्नतें हैं । (तालीमुल इसलाम)

वुज़ू की मुसतहबात

वुज़ू में १० दस बातें मुसतहिब हैं ।

(१) पाक और उँची जगह पर बैठना (२) क़िबला की जानिब मुँह करना (३) वुज़ू के काम को खुद करना किसी दूसरे की मदद न लेना (४) हर अज़ू को धोते वक्त बिस्मिल्लाह और हदीस में आई हुई दुआ का पढ़ना (५ अंगोठी को हरकत देना कि पानी नीचे तक पहुँच जाए (६) बाएँ हाथ से नाक साफ करना (७) गर्दन का मसह करना (८) वुज़ू करते हुए दुनिया की बातें न करना (९) नमाज़ का वक्त आने से पहले वुज़ू करना (१०) वुज़ू के बचे हुए पानी का खडे होकर पीना । (इलमुलफ़िक़ा

पेज नं.६२ जिल्द अव्वल दुसरी किताब- किताबुल फ़िक़ा पेज नंबर १२३ जिल्द अव्वल)

नोट : इन बातों का ख्याल करने से सवाब में ज़ियादती होती है और छूट जाने से कोई नुक्सान नहीं ।

वुज़ू तोडने वाली चीज़ें

आठ बातों से वुज़ू टूट जाता हे ।

(१) पेशाब या पाखाना करना या इन दोनों रास्तों से किसी चीज़ का निकलना (२) रीह यानी हवा का पीछे से निकलना (३) बदन के किसी भी हिस्से से खून या पीप निकल कर बह जाना (४) मुँह भर क़य यानी उलटी होना (५) लेट कर या सहारा लगाकर सोजाना (६) बीमारी या किसी और वजह से बेहोश होजाना (७) दीवाना या पागल होना (८) नमाज़ में क़हक़हा मार कर हंसना ।

नोट : इन तमाम बातों से वुजू बिलकुल टूट जाता है । (तालीमुल इसलाम) मसाएले वुजू रफअत कासमी ।

नमाज़ तर्जुमे के साथ

नमाज़ में जो कुछ पढा जाता है और उस में जो जो हरकत होती है उस के अलफ़ाज़ और नाम :

तकबीर : اَللّٰهُ اَكْبَرْ

अल्लाहुअकबर = अल्लाह सब से बडा है

सना :

سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ وَتَبَارَكَ اسْمُكَ وَتَعَالٰى جَدُّكَ وَلَا اِلٰهَ غَيْرُكَ ط

सुब्हाना कल्लाहुम्मा व बिहमदिका व तबारकसमुका व तआला जद्दुका व लाइलाहा गैरुक ।

तर्जुमा : अय अल्लाह हम तेरी पाकी का इक़रार करते हैं और तेरी तअरीफ़ बयान करते हैं और

5 तेरा नाम बहुत बरकत वाला है और तेरी शान बहुत बुलंद है और तेरे सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं ।

तऊ़ज़ : أَعُوذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ

अऊ़ज़ु बिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम

पनाह मांगता हूँ मैं अल्लाह की शैतान मर्दूद से

तसमिया

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

शुरु करता हूँ मैं अल्लाह के नाम से जो बडा मेहरबान निहायत रहम वाला है ।

(मुफ़्ती किफ़ायतुल्लाह)

सुरए फ़ातेहा

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ مٰلِكِ

يَوْمِ الدِّيْنِ ۝ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ۝ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۝ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ۝

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अलहम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन , अर्रहमां निर्रहीमि मालिकि यवमिद्दीन , इय्याक नअबुदू व इय्याक नसतईन , इहदिनससिरातल मुस्तकीम , सिरातल्लज़ीन अनअमत अलैहिम गै़रिल मग़ज़ूबि अलैहिम वलज़्ज़ॉल्लीन ।

तर्जुमा : हर किस्म की तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लायक़ हैं । तमाम जहानों का पालने वाला रोज़े जज़ा का मालिक है । (अय अल्लाह) हम तेरी ही इबादत करते हैं और तुझ से ही मदद मांगते हैं हम को सीधे रास्ते पर चला उन लोगों के रास्ते

पर जिन पर तूने इनआम फ़रमाया है न उन लोगों के रास्ते पर जिन पर तेरा ग़ज़ब नाज़िल हुवा और न गुमराहों के रास्ते पर ।

(रफ़अत क़ासमी)

सुरए वज़्ज़ुहा

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

وَالضُّحٰى ﴿۱﴾ وَالَّيْلِ اِذَا سَجٰى ﴿۲﴾ مَا وَدَّعَكَ رَبُّكَ وَمَا قَلٰى ﴿۳﴾ وَ
لَلْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لَّكَ مِنَ الْاُوْلٰى ﴿۴﴾ وَلَسَوْفَ يُعْطِيْكَ رَبُّكَ
فَتَرْضٰى ﴿۵﴾ اَلَمْ يَجِدْكَ يَتِيْمًا فَاٰوٰى ﴿۶﴾ وَوَجَدَكَ ضَآلًّا
فَهَدٰى ﴿۷﴾ وَوَجَدَكَ عَآئِلًا فَاَغْنٰى ﴿۸﴾ فَاَمَّا الْيَتِيْمَ فَلَا
تَقْهَرْ ﴿۹﴾ وَاَمَّا السَّآئِلَ فَلَا تَنْهَرْ ﴿۱۰﴾ وَاَمَّا بِنِعْمَةِ رَبِّكَ فَحَدِّثْ ﴿۱۱﴾

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

वज़्ज़ुहा , वल्लैलि इज़ा सजा, मा वद्दअका रब्बुका

व मा क़ला, वल्ल आख़िरतु खैरुल्लका मिनलऊला, व लसौफ़ा युअतीका रब्बुका फ़तरज़ा, अलम यजिदका यतीमन फ़आवा, ववजदका ज़ॉल्लन फ़हदा, ववजदका आइलन फ़अग़ना, फ़अम्मल यतीमा फ़ला तक़्हर, व अम्मस्साइला फ़ला तन्हर, व अम्मा बिनिअमति रब्बिका फ़हद्दिस ।

सुरए अलम नशरह

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلَمْ نَشْرَحْ لَكَ صَدْرَكَ ﴿۱﴾ وَوَضَعْنَا عَنْكَ وِزْرَكَ ﴿۲﴾
الَّذِیْۤ اَنْقَضَ ظَهْرَكَ ﴿۳﴾ وَرَفَعْنَا لَكَ ذِكْرَكَ ﴿۴﴾ فَاِنَّ
مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا ﴿۵﴾ اِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا ﴿۶﴾ فَاِذَا
فَرَغْتَ فَانْصَبْ ﴿۷﴾ وَاِلٰى رَبِّكَ فَارْغَبْ ﴿۸﴾

अगर बडा बचने की ख्वाहिश हो तो पेहले छोटा बनो।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अलम नशरह लका सदरका, ववज़अना अनका विज़रकल्लज़ी अनक़ज़ा ज़हरका, व रफ़अना लक ज़िकरका, फ़इन्न मअल उसरि युसरन, इन्ना मअल उसरि युसरा, फ़इज़ा फ़रगता फ़नसब, व इला रब्बिका फ़रगब ।

सुरए वत्तीन

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

وَالتِّيْنِ وَالزَّيْتُوْنِ ۝١ وَطُوْرِ سِيْنِيْنَ ۝٢ وَهٰذَا الْبَلَدِ الْاَمِيْنِ ۝٣ لَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ فِيْٓ اَحْسَنِ تَقْوِيْمٍ ۝٤ ثُمَّ رَدَدْنٰهُ اَسْفَلَ سٰفِلِيْنَ ۝٥ اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَلَهُمْ اَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُوْنٍ ۝٦ فَمَا يُكَذِّبُكَ بَعْدُ بِالدِّيْنِ ۝٧ اَلَيْسَ اللّٰهُ بِاَحْكَمِ الْحٰكِمِيْنَ ۝٨

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

वत्तीनि वज़्ज़ैतूनि, व तूरि सीनीना, व हाज़ल बलदिल अमीन, लक़द ख़लक़नल इन्साना फ़ी अहसनि तक़वीम, सुम्मा रददनाहु असफ़ला साफ़िलीन, इल्लल्लज़ीन आमनू व अमिलुस्सॉलिहाति फ़लहुम अज्रुन गैरु ममनून, फ़मा युकज़्ज़िबुका बअदा बिद्दीन, अलैसल्लॉहु बिअहकमिल हाकिमीन ।

सुरए कद्र

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

إِنَّآ أَنْزَلْنٰهُ فِيْ لَيْلَةِ الْقَدْرِ ۚ وَمَآ أَدْرٰىكَ مَا لَيْلَةُ الْقَدْرِ ۞
لَيْلَةُ الْقَدْرِ خَيْرٌ مِّنْ أَلْفِ شَهْرٍ ۞ تَنَزَّلُ الْمَلٰٓئِكَةُ وَالرُّوْحُ
فِيْهَا بِإِذْنِ رَبِّهِمْ مِّنْ كُلِّ أَمْرٍ ۞ سَلٰمٌ هِيَ حَتّٰى مَطْلَعِ الْفَجْرِ ۞

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

इन्ना अनज़लनाहु फ़ी लैलतिलक़द्र, व मा अदराक मा लैलतुलक़द्र, लैलतुलक़द्रि खैरुम्मिन अलफ़िश्हर, तनज़्ज़लुल मलाइकतु वर्रुहु फ़ीहा बिइज़नि रब्बीहिम मिन कुल्लि अम्र, सलामुन, हिय हत्ता मतलइल फ़ज्र ।

सुरए ज़िलज़ाल

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اِذَا زُلْزِلَتِ الْاَرْضُ زِلْزَالَهَا ۝ وَاَخْرَجَتِ الْاَرْضُ اَثْقَالَهَا ۝ وَقَالَ الْاِنْسَانُ مَا لَهَا ۝ يَوْمَئِذٍ تُحَدِّثُ اَخْبَارَهَا ۝ بِاَنَّ رَبَّكَ اَوْحٰى لَهَا ۝ يَوْمَئِذٍ يَّصْدُرُ النَّاسُ اَشْتَاتًا ۵ لِّيُرَوْا اَعْمَالَهُمْ ۝ فَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَّرَهٗ ۝ وَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَّرَهٗ ۝

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

इज़ा ज़ुलज़िलतिल अर्ज़ु. ज़िलज़ालहा, व अख़रजतिल अर्ज़ु असक़ालहा, व क़ालल इन्सानु मालहा, यवमइज़िन तुहद्दिसु अख़बारहा, बिअन्न रब्बका अवहालहा, यवमइज़िंय्यसदु रुन्नासु अशतातल्लियुरव अअमालहुम, फ़मंय्यअमल मिसक़ाल ज़र्रतिन खैरंय्यरा, व मैंय्यअमल मिसक़ाल ज़र्रतिन शर्रंय्यरा।

सुरए आदियात

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

وَالْعٰدِيٰتِ ضَبْحًا ۙ فَالْمُوْرِيٰتِ قَدْحًا ۙ فَالْمُغِيْرٰتِ
صُبْحًا ۙ فَاَثَرْنَ بِهٖ نَقْعًا ۙ فَوَسَطْنَ بِهٖ جَمْعًا ۙ
اِنَّ الْاِنْسَانَ لِرَبِّهٖ لَكَنُوْدٌ ۚ وَاِنَّهٗ عَلٰى
ذٰلِكَ لَشَهِيْدٌ ۚ وَاِنَّهٗ لِحُبِّ الْخَيْرِ لَشَدِيْدٌ ۚ
اَفَلَا يَعْلَمُ اِذَا بُعْثِرَ مَا فِى الْقُبُوْرِ ۙ وَحُصِّلَ مَا
فِى الصُّدُوْرِ ۙ اِنَّ رَبَّهُمْ بِهِمْ يَوْمَئِذٍ لَّخَبِيْرٌ ۚ

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

वलआदियाति ज़बहन, फ़लमूरियाति क़दहन, फ़लमुग़ीराति सुबहा, फ़असरन बिही नक़अन, फ़वसतना बिही जमआ, इन्नलइन्सान लिरब्बिही लकनूद, व इन्नहूआ ज़ालिक लशहीद, व इन्नहू लिहुब्बिलखैरि लशदीद, अफ़ला या लमु इज़ा बोअसिरा मा फ़िलक़ुबूरि, व हुस्सिला मा फ़िस्सुदूर, इन्ना रब्बाहुम बिहिम यवमइजिल्लख़बीर ।

सुरए क़ारिआ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلْقَارِعَةُ ۝ مَا الْقَارِعَةُ ۝ وَمَا اَدْرٰىكَ مَا الْقَارِعَةُ ۝

يَوْمَ يَكُوْنُ النَّاسُ كَالْفَرَاشِ الْمَبْثُوْثِ ۝ وَتَكُوْنُ

الْجِبَالُ كَالْعِهْنِ الْمَنْفُوْشِ ۝ فَاَمَّا مَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِيْنُهٗ ۝

فَهُوَ فِي عِيشَةٍ رَّاضِيَةٍ ۝ وَأَمَّا مَنْ خَفَّتْ مَوَازِينُهُ ۝

فَأُمُّهُ هَاوِيَةٌ ۝ وَمَا أَدْرَاكَ مَا هِيَهْ ۝ نَارٌ حَامِيَةٌ ۝

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अलक़ारिअतु , मलक़ारिआ, वमा अद्राक मलकारिआ, यवमा यकूनुन्नासु कलफ़राशिल मबसूसि, व तकूनुलजिबालु कलइहनिल मनफ़ूश फ़अम्मामन सकुलत मवाज़ीनुहू, फ़हुवा फ़ी ईशतुर्राज़िया, व अम्मामन ख़फ़्फ़त मवाज़ीनुहू, फ़उम्मुहू हाविया, वमा अद्राक माहिया, नारुन हामिया ।

सुरए तकासुर

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

أَلْهَاكُمُ التَّكَاثُرُ ۝ حَتَّىٰ زُرْتُمُ الْمَقَابِرَ ۝ كَلَّا سَوْفَ

تَعْلَمُوْنَ ۝ ثُمَّ كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۝ كَلَّا لَوْ تَعْلَمُوْنَ

عِلْمَ الْيَقِيْنِ ۝ لَتَرَوُنَّ الْجَحِيْمَ ۝ ثُمَّ لَتَرَوُنَّهَا

عَيْنَ الْيَقِيْنِ ۝ ثُمَّ لَتُسْـَٔلُنَّ يَوْمَئِذٍ عَنِ النَّعِيْمِ ۝

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अलहाकुमुत्ताका सुरु, हत्ता ज़ुरतुमुल मक़ाबिर, कल्ला सवफ़ा तअलमून, सुम्म कल्ला सवफ़ तालमून, कल्ला लव तअलमून इलमल यक़ीन, लतरवुन्नलजहीम, सुम्म लतरवुन्नहा एयनल यक़ीन, सुम्म लतुसअलुन्न यवमइज़िन अनिन्नईम।

सुरए वलअस्र

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

وَالْعَصْرِ ۝ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَفِيْ خُسْرٍ ۝ اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَتَوَاصَوْا بِالْحَقِّ ۙ وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ ۝

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

वलअस्रि, इन्नल इन्सान लफ़ी ख़ुस्र, इल्लल्लज़ीना आमनू व अमिलुस्सॉलिहाति व तवासौ बिलहक्कि़ व तवासौ बिस्सब्र ।

सुरए हमज़ा

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

وَيۡلٌ لِّكُلِّ هُمَزَةٍ لُّمَزَةِ ۙ﴿۱﴾ الَّذِىۡ جَمَعَ مَالًا وَّعَدَّدَهٗ ۙ﴿۲﴾ يَحۡسَبُ اَنَّ مَالَهٗۤ اَخۡلَدَهٗ ۚ﴿۳﴾ كَلَّا لَيُنۡۢبَذَنَّ فِى الۡحُطَمَةِ ۖ﴿۴﴾ وَمَاۤ اَدۡرٰٮكَ مَا الۡحُطَمَةُ ؕ﴿۵﴾ نَارُ اللّٰهِ الۡمُوۡقَدَةُ ۙ﴿۶﴾ الَّتِىۡ تَطَّلِعُ عَلَى الۡاَفۡـِٕدَةِ ؕ﴿۷﴾ اِنَّهَا عَلَيۡهِمۡ مُّؤۡصَدَةٌ ۙ﴿۸﴾ فِىۡ عَمَدٍ مُّمَدَّدَةٍ ﴿۹﴾

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

वैलुल्लि कुल्लि हुमज़तिल्लुमज़ा, अल्लज़ी जमअ मालौंव्वअदददह, यहसबु अन्ना मा लहू अख़लदह,

कल्ला लयुम्बज़न्न फ़िलहुतमति, वमा अदराक मल हुतमा, नारुल्लाहिलमूकदतुल्लती तत्तलिऊ अलल अफ़इदा, इन्नहा अलैहिम मूसदतुन, फ़ी अमदिम्मुमद्ददह ।

सुरए फ़ील

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِاَصْحٰبِ الْفِيْلِ ۝١ اَلَمْ يَجْعَلْ كَيْدَهُمْ فِيْ تَضْلِيْلٍ ۝٢ وَّاَرْسَلَ عَلَيْهِمْ طَيْرًا اَبَابِيْلَ ۝٣ تَرْمِيْهِمْ بِحِجَارَةٍ مِّنْ سِجِّيْلٍ ۝٤ فَجَعَلَهُمْ كَعَصْفٍ مَّاْكُوْلٍ ۝٥

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अलम तरा कैफा फअला रब्बुका बिअसहाबिल फ़ील, अलम यजअल़ कैदहुम फ़ी तज़लीलिंव्व

अ़रसला अलैहिम तैरन अबाबील, तरमीहिम बि हिजारतिम्मिन सिज्जील, फ़जअलहुम कअ़स फ़िम्माअकूल।

सुरए कुरैश

بِسۡمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحۡمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

لِإِيلَٰفِ قُرَيۡشٍ ۝١ إِۦلَٰفِهِمۡ رِحۡلَةَ ٱلشِّتَآءِ وَٱلصَّيۡفِ ۝٢ فَلۡيَعۡبُدُواْ رَبَّ هَٰذَا ٱلۡبَيۡتِ ۝٣ ٱلَّذِيٓ أَطۡعَمَهُم مِّن جُوعٖ وَءَامَنَهُم مِّنۡ خَوۡفِۭ ۝٤

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम
लिईलाफि कुरैशिन, ईलाफ़िहिम रिहलतश्शिताइ वस्सैफ़, फ़लयअबुदू रब्ब हाज़ल बैतिल्लज़ी अतअ़महुम मिन जूअिंव्व आमनहुम मिन खौफ़।

सुरए माऊन

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

أَرَءَيْتَ الَّذِىْ يُكَذِّبُ بِالدِّيْنِ ۝١ فَذٰلِكَ الَّذِىْ يَدُعُّ
الْيَتِيْمَ ۝٢ وَلَا يَحُضُّ عَلٰى طَعَامِ الْمِسْكِيْنِ ۝٣ فَوَيْلٌ
لِّلْمُصَلِّيْنَ ۝٤ الَّذِيْنَ هُمْ عَنْ صَلَاتِهِمْ سَاهُوْنَ ۝٥
الَّذِيْنَ هُمْ يُرَآءُوْنَ ۝٦ وَيَمْنَعُوْنَ الْمَاعُوْنَ ۝٧

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अरऔतल्लज़ी युकज़्ज़िबु बिद्दीन, फ़ज़ालिकल्लज़ी यदुअउल यतीम, वला यहुज़्ज़ु अला तआमिल मिसकीन, फ़वैलुल्लिल मुसल्लिन,ल्लजीन हुम अन सलॉतिहिम साहून, अल्लज़ीन हुम युराऊन, व यम नऊनल माऊन ।

सुरए कवसर

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اِنَّآ اَعْطَيْنٰكَ الْكَوْثَرَ ۝ فَصَلِّ لِرَبِّكَ وَانْحَرْ ۝

اِنَّ شَانِئَكَ هُوَ الْاَبْتَرُ ۝

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

इन्ना आअत़ैना कल कवसर, फ़सल्लिलि रब्बिका वनहऱ, इन्न शानिअका हुवल अबतर।

सुरए काफ़िरुन

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قُلْ يٰۤاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ ۝ لَآ اَعْبُدُ مَا تَعْبُدُوْنَ ۝ وَلَآ

اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَآ اَعْبُدُ ۝ وَلَآ اَنَا عَابِدٌ مَّا عَبَدْتُّمْ ۝ وَلَآ

اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَآ اَعْبُدُ ۝ لَكُمْ دِيْنُكُمْ وَلِيَ دِيْنِ ۝

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम
कुल या अय्युहल काफ़िरून, ला अअबुदू मा तअबुदून, व ला अनतुम आबिदून मा अअबुद, व ला अना आबिदुम्मा अबत्तुम वला अन्तुम आबिदून मा अअबुद, लकुम दीनुकुम व लि यदीन।

सुरह नसर

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

إِذَا جَآءَ نَصْرُ اللّٰهِ وَالْفَتْحُ ۝١ وَرَاَيْتَ النَّاسَ يَدْخُلُوْنَ فِيْ دِيْنِ اللّٰهِ اَفْوَاجًا ۝٢ فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَاسْتَغْفِرْهُ ۚ اِنَّهٗ كَانَ تَوَّابًا ۝٣

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम
इज़ा जाअ नसरुल्लाहि वल फत्ह, व र ऐतन्नासा यदख़ुलूना फ़ी दीनिल्लाहि अफ़वाजा, फ़सब्बिह

बिहमदि रब्बिका वसतग़फ़िरह, इन्नहू काना तव्वाबा ।

सुरए लहब

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

تَبَّتْ يَدَآ اَبِىْ لَهَبٍ وَّتَبَّ ۝١ مَآ اَغْنٰى عَنْهُ مَالُهٗ وَمَا كَسَبَ ۝٢ سَيَصْلٰى نَارًا ذَاتَ لَهَبٍ ۝٣ وَّامْرَاَتُهٗ ؕ حَمَّالَةَ الْحَطَبِ ۝٤ فِىْ جِيْدِهَا حَبْلٌ مِّنْ مَّسَدٍ ۝٥

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

तब्बतयदा अबी लहबिंव्वतब्ब, मा अगना अन्हु मा लुहू वमा कसब, सयसला नारनज़ाता लहबिंव्व, अमरअतूह, हम्मा लतलहतब, फ़ीजीदिहा हबलुम्मिममसद ।

सुरए इख़लास

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

قُلۡ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۝١ اَللّٰهُ الصَّمَدُ ۝٢ لَمۡ يَلِدۡ ۙ وَلَمۡ يُوۡلَدۡ ۝٣ وَلَمۡ يَكُنۡ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ۝٤

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

कुलहुवल्लाहु अहद, अल्लाहुस्समद, लम यलिद वलम यूलद, वलम यकुल्लहू कुफ़ूवन अहद।

सुरए फ़लक़

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

قُلۡ اَعُوۡذُ بِرَبِّ الۡفَلَقِ ۝١ مِنۡ شَرِّ مَا خَلَقَ ۝٢ وَ مِنۡ شَرِّ غَاسِقٍ اِذَا وَقَبَ ۝٣ وَمِنۡ شَرِّ النَّفّٰثٰتِ فِى الۡعُقَدِ ۝٤ وَمِنۡ شَرِّ حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ ۝٥

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

क़ुल अऊज़ू बिरब्बिल फ़लक़ि, मिन शर्रि मा ख़लक़, व मिन शर्रि गासिक़िन इज़ा वक़ब, व मिन शर्रिन्नफ़्फ़ासाति फ़िलउक़द, व मिन शर्रि हासिदिन इज़ा हसद ।

सुरए नास

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ ۝ مَلِكِ النَّاسِ ۝ اِلٰهِ النَّاسِ ۝ مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ ۝ الْخَنَّاسِ ۝ الَّذِیْ يُوَسْوِسُ فِیْ صُدُوْرِ النَّاسِ ۝ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ ۝

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

क़ुल अऊज़ु बिरब्बिन्नासि, मलिकिन्नासि, इलाहिन्नासि, मिन शर्रिलवसवासिल ख़न्नासि, ल्लज़ी युवसविसु फ़ी सुदूरिन्नासि, मिनल जिन्नति वन्नास ।

रुकूअ की तसबीह

سُبْحَانَ رَبِّيَ الْعَظِيْم सुब्हाना रब्बियल अज़ीम
पाकी बयान करता हूँ मैं अपने परवरदिगार की
जो बडी अज़मत वाला है । (आशिके इलाही)
यह तसबीह रुकूअ की हालत में ३ या ५ या ७
मर्तबा पढ़े ।

रुकूअ से उठते हुए

سَمِعَ اللّٰهُ لِمَنْ حَمِدَهٗ समीअल्लाहु लिमन हमिदा
अल्लाह ने उस की सुन ली जिस ने उस की
तारीफ़ की ।

कवमा : यानी रुकूअ से उठकर खडे होने की
हालत में رَبَّنَا لَكَ الْحَمْد रब्बाना
लकलहम्द , अय हमारे रब तेरे ही लिए सब
तारीफ़ है ।

सजदे की तसबीह

سُبْحَانَ رَبِّيَ الْاَعْلٰى सुब्हाना रब्बियल आअला

पाकी बयान करता हूँ मैं अपने परवरदिगार की जो बहुत बरतर है । यह तसबीह ३ या ५ या ७ बार पढ़े ।

क़ायदे में तशह्हुद

اَلتَّحِيَّاتُ لِلّٰهِ وَالصَّلَوٰتُ وَالطَّيِّبَاتُ ط اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ ○ اَلسَّلَامُ عَلَيْنَا وَعَلٰى عِبَادِ اللّٰهِ الصّٰلِحِيْنَ ○ اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ ○

अत्तहिय्यतु लिल्लाहि वस्सलावातु वत्तय्यिबातु, अस्सलामु अलैका अय्युहन्नबिय्यु व रहमतुल्लाहि व बरकातुहु, अस्सलामु अलैना व अला इबादिल्लाहिस्सॉलिहीन, अशहदु अल्लाइलाहा इल्लल्लाहु व अशहदु अन्ना मुहम्मदन अबदुहू व रसूलुहु ।

तर्जुमा : तमाम कव्ली इबादतें और तमाम फ़ेअली इबादतें और तमाम माली इबादतें अल्लाह ही के लिए हैं । सलाम हो तुम पर अय नबी (स.) और अल्लाह की रहमत हो और उस की बरकतें हों, सलाम हो हम पर और अल्लाह के नेक बन्दों पर गवाही देता हूँ मैं यह कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह के बन्दे और उस के रसूल हैं

माँ अगर दुआ है तो बाप उस दुआ की वजह है।

दुरूद शरीफ़

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ ٥

اَللّٰهُمَّ بَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ ٥

अल्लाहुम्मा सल्ले अला मुहम्मदिंव्व अला आलि मुहम्मदिन कमा सल्लैता अला इब्राहीमा व अला आलि इब्राहीमा इन्नका हमीदुम्मजीद ।

अल्लाहुम्मा बारिक अला मुहम्मदिंव्व अला आलि मुहम्मदिन कमा बारकता अला इब्राहीमा व अला आलि इब्राहीमा इन्नका हमीदुम्मजीद ।

तर्जुमा : अय अल्लाह रहमत नाज़िल फ़रमा मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर और उन की आल पर जैसे कि तूने रहमत नाज़िल फ़रमाई इब्राहीम अलैहिस्सलाम पर और उन की आल पर , बेशक तू ताअरीफ़ के लायक़ बडी बुज़ुर्गी वाला है ।

अय अल्लाह बरकत नाज़िल फ़रमा मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर और उन की आल पर जैसे कि तूने बरकत नाज़िल फ़रमाई इब्राहीम अलैहिस्सलाम पर और उन की आल पर , बेशक तू ताअरीफ़ के लायक़ बडी बुज़ुर्गी वाला है ।

दुआए मासूरा

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ ظَلَمْتُ نَفْسِیْ ظُلْمًا کَثِیْرًا وَّلَا

يَغْفِرُ الذُّنُوبَ إِلَّا أَنْتَ فَاغْفِرْ لِيْ مَغْفِرَةً مِّنْ عِنْدِكَ وَارْحَمْنِيْ إِنَّكَ أَنْتَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ○

अल्लाहुम्मा इन्नी ज़लमतु नफ़सी ज़ुलमन कसीरौंव्वला यग़फ़िरुज़्ज़ुनूबा इल्ला अनता फ़ग़फ़िरली मग़फ़िरतम्मिन इनदिका वरहमनी इन्नका अनतल ग़फ़ूरुर्रहीम।

तर्जुमा : अय अल्लाह मैं ने अपने नफ़्स पर बहुत बहुत ज़ुल्म किया है और सिवाए तेरे कोई और गुनाहों को बख्श नहीं सकता पस तू अपनी तरफ़ से खास बखशिश से मुझ को बख्श दे और मुझ पर रहम फ़रमादे , बेशक तू ही बख्शने वाला निहायत रहम वाला है। (मुफ़्ती किफ़ायतुल्लाह)

सलाम : اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللهِ

अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाह

तर्जुमा : सलाम हो तुम पर और अल्लाह की रहमत हो ।

नमाज़ के बाद की दुआ

اَللّٰهُمَّ اَنْتَ السَّلَامُ وَمِنْكَ السَّلَامُ تَبَارَكْتَ يَاذَاالْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ ۝

अल्लाहुम्मा अनतस्सलाम व मिनकस्सलाम तबारकता या ज़लजलालि वल इकराम ।

तर्जुमा : अय अल्लाह तू ही सलामती देने वाला है और तेरी ही तरफ़ से सलामती मिल सकती है । बहुत बरकत वाला है तू अय अज़मत और बुजुर्गी वाले ।

नोट : हिंदी में अरबी अलफाज़ का सही तलफ्फ़ुज़ अदा नही होता.इसलिए अरबी सिखें

दुआए कुनूत

اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَسْتَعِيْنُكَ وَنَسْتَغْفِرُكَ وَنُؤْمِنُ بِكَ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْكَ وَنُثْنِيْ عَلَيْكَ الْخَيْرَ ۝ وَنَشْكُرُكَ وَلَا نَكْفُرُكَ وَنَخْلَعُ وَنَتْرُكُ مَنْ يَّفْجُرُكَ ط اَللّٰهُمَّ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَلَكَ نُصَلِّيْ وَنَسْجُدُ وَاِلَيْكَ نَسْعٰى وَنَحْفِدُ وَنَرْجُوْ رَحْمَتَكَ وَنَخْشٰى عَذَابَكَ اِنَّ عَذَابَكَ بِالْكُفَّارِ مُلْحِقٌ ۝

अल्लाहुम्मा इन्ना नसतईनुका व नसतग़फ़िरुका व नोअमिनुबिका व नतवक्कलु अलैका व नुसनी अलैकलखैर, व नशकुरुका व ला नकफुरुका व नख़लओ व नतरुकु मैंय्यफ़जुरुका , अल्लाहुम्मा

इय्याका नअबुदु वलाका नुसल्ली व नसजुदु व इलैका नसआ व नहफ़िदु व नरजु रहमतका व नख़शा अज़ाबका इन्ना अज़ाबका बिलकुफ़्फ़ारि मुलहिक़ ।

तर्जुमा : अय अल्लाह हम तुझ से ही मदद मांगते हैं और मग़फ़िरत तलब करते हैं और तेरे ऊपर ईमान लाते हैं और तेरे ऊपर भरोसा रखते हैं और तेरी बहुत अच्छी ताअरीफ़ करते हैं और तेरा शुक्र अदा करते हैं और तेरी ना शुक्री नहीं करते और अलाहिदा कर देते और छोड देते हैं उस शख्स को जो तेरी नाफ़रमानी करे , अय अल्लाह हम तेरी ही इबादत करते हैं और खास तेरे लिए नमाज़ पढते और सजदा करते हैं और तेरी ही जानिब दौडते और झपटते हैं और तेरी ही रहमत की उम्मीद रखते हैं और तेरे अज़ाब से डरते हैं । बेशक तेरा अज़ाब काफ़िरों को पहुँचने वाला है ।

नमाज़ पढ़ने का तरीक़ा

सब से पहले जब नमाज़ पढने के लिए खडे हों तो किबला की तरफ़ मुंह करके सीधे खडे हो जाओ खास तौर से दोनों कदमों के दरमियान चार उंगली का फ़ासला हो। पीछे एडी की जानिब भी और आगे भी चार उंगल का फ़ासला हो तिरछे पैर करके न खडे हों दोनों अंगोठे किबला की तरफ़ हों (खडे होने का अंदाज़ समझ गए होंगे) अब जो भी नमाज़ पढनी हो उस की दिल से निय्यत करना ज़रुरी है और ज़बान से कहना ज़रुरी नहीं अगर ज़बान से कह भी लिए तो कोई हर्ज नहीं जैसे फ़ज्र की २ सुन्नत पढना हो तो इस तरह निय्यत करें। निय्यत करता हूँ मैं फ़ज्र की २ रकअत सुन्नत नमाज़ पढने की वासते अल्लाह तआला के मुंह मेरा कअबा शरीफ़ की तरफ़, अल्लाहु अकबर। कानों तक हाथ इस

तरह उठाएँ कि हाथों की हथेलियाँ ओर उंगलियाँ खुली हुई हों। रुख किब्ला की जानिब और अंगोठा कानों की लव के मुकाबिल हो। (तालीमुल इसलाम) हिस्सा सुव्वम फ़िर अल्लाहु अकबर कह कर दोनों हाथ नाफ़ के नीचे बांध लो। सीधे हाथ की हथेली बाएँ हाथ की हथेली की पुश्त पर रहे और अंगोठा और करुंगली से हलके के तौर पर गट्टे को पकडलो और बाकी 3 उंगलियाँ कलाई पर हों और नज़र सजदे की जगह पर हो। हाथ बांध कर आहिस्ता आहिस्ता सना पढे। फिर तऊज़, तसमिया पढ कर सुरए फ़ातिहा पढो जब सुरए फ़ातेहा खत्म करलो तो आहिस्ता से आमीन कहें। उस के बाद आप को जो भी सुरत याद हो उस की तिलावत साफ़ साफ़ और सही सही करें जल्दी न करें उसके बाद अल्लाहु अकबर बोलकर रुकूअ में चले जाएँ(तालीमुलइसलाम)

रुकुअ सजदा अच्छा हो

उंगलियाँ खोल कर घुटनो को पकडलो और पैर सीधा रखते हुए सर,पैर और कमर तीनों को बराबर एक ही सीध में रखें अगर पानी का प्याला आप की पीठ पर रखा जाए तो गिरे नही.हाथ पसलियों से अलग बिलकुल सिधा रखें,खम (कमान) न पडे और नज़र दोनों पैरों के दरमियान रहे अब इतमिनान से रुकुअ की तसबीह ३ मरतबा या ५ या फीर ७ मरतबा पढें फिर तसमिअ कहते हुए सीधे,खडे हो जाए.इस खडे होने की हालत को कवमा कहते है.

कवमा अच्छा हो

कवमा में हाथ छोडकर सीधे खडे हो जाएँ कमर झुकी हुई न हो नज़रें सजदे की जगह पर रहें.

अब पढिये । रब्बाना लकलहम्द

नोट = बाज़ लोग रुकूअ से उठने का ज़रा सा इशारा करके फ़ोरन सजदे में चले जाते हैं जिस की वजह से कवमा तर्क हो गया या अच्छी तरह अदा न हुवा इस वजह से नमाज़ बिलकुल न हुई क्युँ कि कवमा वाजिब है जो छूट गया ।

सजदा अच्छा हो

सजदे में जाते हुए पहले घुटना जमीन पर रक्खें फिर दोनों हाथ, फिर नाक और फिर पेशानी, हाथ के दोनों अंगोठों के सिरे कान की लव के मुकाबिल आ जाएँ और उंगलियाँ सब मिली हुई हों और तमाम उंगलियाँ भी किबला रुख हों । कोहनियाँ जमीन से ऊँची हों दोनों बाज़ू पहलू से जुदा रहें । पेट रानों से जुदा हो, नज़र नाक पर हो और दोनों पैरों की उंगलियाँ जमीन पर

टिकी रहें। जमीन से पैर का पंजा ऊपर न उठाएँ अब इतमिनान से सजदे की तसबीह ३ या ५ या ७ बार पढ़ें। और अल्लाहु अकबर कहते हुए सजदे से उठकर बैठ जाएँ इस बैठने की हालत को जलसा कहते हैं।

जलसा अच्छा हो

जलसे में बाएँ पैर के पंजे पर बैठें और सीधे पैर के पंजे को खडा करदें और दोनों हाथों को रानों पर रखें और नज़र अपनी गोद में रक्खें और इतनी देर तक बैठे कि एक मर्तबा इतमिनान से सुब्हानल्लाह कह सकें।

नोट : बाज़ लोगों की यह आदत है कि एक सजदा करके मुकम्मल तौर से बैठने भी नहीं पाते कि वह फ़ौरन दुसरे सजदे में चले जाते हैं. जिस की वजह से जलसा छूट गया या फिर

अच्छी तरह अदा न हुवा इस वजह से नमाज़ नहीं हुअ असलिए कि जलसे का अदा करना वाजिब है। अल्लाहु अकबर कहते हुए दूसरा सजदा उसी तरह करें कि पहले दोनों हाथ जमीन पर रखें फिर नाक, फिर पेशानी । इसी तरह सजदे से उठते वक्त पहले पेशानी उठाएँ फिर नाक, अगर कोई उज़्र न हो तो उठते वक्त जमीन का सहारा बिलकुल न लें । इस तरह एक रकअत पूरी हुई। इसी तर्तीब व तर्कीब से दूसरी रकअत भी पूरी करें । दूसरी रकअत में तऊज़ न पढें सिर्फ तसमिया पढकर अलहम्दु और कोई भी सूरत पढकर रुकूअ और दोनों सजदे करके उठकर दो ज़ानू क़ायदा में बैठ जाएँ ।

कायदा अच्छा हो

कायदा में बैठने का तरीक़ा इसी तरह है जिस

तरह जलसा में बैठने का बताया गया है । अब इतमिनान से अत्तहियात , दुरूद शरीफ़ और दुआए मासूरा पढें । अत्तहियात में अशहदु अल्ला इलाहा
पर पहुँचें तो शहादत की उंगली ऊपर उठाएँ और

इल्लल्लाह पर नीचे कर दें ।

कायदा में पढने वाली तमाम चीज़ें पढकर पहले सीधी तरफ़ फिर बाएँ तरफ़ सलाम फेरें और नज़र कंधे पर रक्खें । इस तरह आप की नमाज़ मुकम्मल हुई ।

नमाज़ के फ़राएज़

नमाज़ में कुल १४ फ़राएज़ हैं . ७ बाहेर के और ७ अन्दर के , ७ बाहेर के फ़राएज़ को शराएते नमाज़ कहते हैं और ७ अन्दर के फ़राएज़ को अरकाने नमाज़ कहते हैं । बाहर के ७ फ़राएज़

दर्जे ज़ैल हैं ।

(१) बदन का पाक होना (२) कपडों का पाक होना (३) जगाह का पाक होना (४) सतर का छुपाना (५) वक्त का मालूम होना (६) क़िबला की तरफ़ मुंह करना (७) नियत करना

सात अन्दर के फ़राएज़ : (१) तक्बीरे तहरीमा यानी अल्लाहु अकबर कहना (२) कयाम यानी खडे होना (३) कुरआने शरीफ़ की तिलावत करना यानी एक बडी आयत या ३ छोटी आयतों का पढना (४ रुकूअ करना (५) हर रकअत में दो सजदे करना (६) अत्तहिय्यात की मिक़दार कायदए अखीरा में बैठना (७ अपने इरादे से सलाम फेरना।

नोट : अगर इन में से एक भी भूल से छूट.जाए तो नमाज़ नहीं होगी ।

नोट : हिंदी में अरबी अलफाज़ का सही तलफ्फुज़ अदा नही होता.इसलिए अरबी सिखें

नमाज़ के वाजिबात

नमाज़ के १४ (चौदा) वाजिबात हैं ।

(१) सूरए फ़ातेहा पढना (२) सूरए फ़ातेहा को सुरत मिलाने से पहले पढना (३) फ़र्ज़ नमाज़ों की पहली २ रकअतों में और बाक़ी सब नमाज़ों में अलहम्द के साथ सुरत का मिलाना (४) तमाम अरकान में तर्तीब कायम रखना (५) कवमा करना (६) जलसा करना (७) तअदीले अरकान करना (८) कायदए ऊला करना (९) दोनों कायदों में अत्तहिय्यात पढना (१०) वित्र की नमाज़ में दआए कुनूत का पढना (११) इमाम का फ़ज्र, मग़रिब व इशा और जुमआ व ईदैन में बुलंद आवाज़ से तिलावत करना और ज़ोहर व अस्र आहिस्ता आवाज़ से तिलावत करना (१२) लफ़्ज़ सलाम से नमाज़ ख़त्म करना (१३) दोनों ईद की नमाज़ों में छः ज़ाएद तकबीरें कहना (१४) तमाम अरकान

पय दर पय अदा करना ।

नोट : इन में से कोई एक वाजिब या कई वाजिब छूट जाए तो याद आने पर सजदए सहू करने से नमाज़ दुरुस्त हो जाएगी और सजदए सहू न किया तो नमाज़ दोहराना (दोबारा पढना) होगी। (मौलाना आशिक अली)

तरीक़ा सजदए सहू का

आखरी कायदे मे सिर्फ़ अत्तहिय्यात पढ कर सीधी जानिब एक सलाम फेरदे और फिर अल्लाहु अकबर कहते हुए सजदे मे चला जाए सजदे में तसबीह पढकर अल्लाहु अकबर कहते हुए उठे और इसी तरह दूसरा सजदा करके कायदे में बैठे और फिर से अत्तहिय्यात पढे फिर दुरुद शरीफ़,दुआए मासूरा पढकर दोनों तरफ़ सलाम फेरदे ।

नमाज़ की सुन्नतें

अब नमाज़ की सुन्नों में मालूम होगा कौन सी हरकत सुन्नत है और क्या क्या पडना सुन्नत है ध्यान दीजिए पहले कयाम की सुन्नतें (11) हैं. (1) तकबीरे तहरीमा के वक्त सीधा खडा होना , सर को न झुकाना (2) दोनों पैरों के दरमियान चार ऊगलियों का फ़ासला होना और पैरों की उंगलियाँ क़िबला की तरफ़ होना (3) मुक्तदी की तकबीरे तहरीमा के वक़्त दोनों हाथ कानों तक उठाना (5) हथेलियों को क़िबला की तरफ़ रखना (6) उंगलियों को अपनी हालत पर रखना यानी न जियादा खुली हुई और न जियादा मिली हुई रखना (7) दाएँ हाथ की हथेली बाएँ हाथ की हथेली की पुश्त पर रखना (8) छुंगली और अंगोठे से हलक़ा बनाकर गट्टे को पकडना (9)

दरमियानी तीन उंगलियों को बाएँ हाथ की कलाई पर रखना (१०) नाफ़ के नीचे हाथ बांधना (११) सना पढ़ना ।

तिलावत की ७ (सात) सुन्नतें

(१) अऊज़ुबिल्लाह पढ़ना (२) बिस्मिल्लाह पढ़ना (३) आहिस्ता से आमीन कहना (४) फज्र और ज़ोहर में तिवाल मुफ़स्सल यानी सुरे हुजरात से सूरए बुरुज तक कोई सुरत पढ़ना और मगरिब में क़िसार मुफ़स्सल यानी सुरए इज़ाज़ुलज़िलतिल अर्ज़ु से सुरए नास तक की कोई भी सूरतें पढ़ना (५) फ़ज्र की पहली रकअत को लंबी पढ़ना (६) न जियादा जल्दी पढ़ना और न जियादा ठहर कर पढ़ना बलके दरमियानी रफ्तार से पढ़ना (७) फ़र्ज़ की तीसरी और चौथी रकअत में सिर्फ़ सुरए फ़ातेहा पढ़ना ।

रुकूअ की ८ (आठ) सुन्नतें

(१) रुकूअ की तकबीर कहना (२) रुकूअ में दोनों हाथों से घुटनों को पकडना (३) घुटनों को पकडने में उंगलियाँ कुशादा रखना (४) पिंडलियों को सीधा रखना (५) पीठ बिछा देना (६) सर और सुरीन को बराबर रखना यानी सर और कमर दोनों बराबर हमवार रहें (७) रुकूअ में कम अज़ कम तीन बार तसबीह पढना (८) रुकूअ से उठते वक्त में इमाम को समिअल्लाहुलिमन हमिदा और मुक्तदी को रब्बना लकल हम्द कहना और अगर आप अकेले पढ रहे हों तो दोनों कहना (एक मिनिट का मदरसा)

सजदे की १२ (बारा) सुन्नतें

(१) सजदे की तकबीर कहना (२) सजदे में पहले

दोनों घुटनों को रखना (३) फिर दोनों हाथों को रखना (४) फिर नाक रखना (५) फिर पेशानी रखना (६) दोनों हाथों के दरमियान सजदा करना (७) सजदे में पेट को रानों से अलग रखना (८) पहलूओं को बाज़ूओं से अलग रखना (९) कोहनियों को ज़मीन से ऊँचा रखना (१०) सजदे में कम से कम तीन मर्तबा तसबीह पढना (११) सजदे से उठने की तकबीर कहना (१२) सजदे से उठते हुए पहले पेशानी फिर नाक फिर हाथों को फिर घुटनों को उठाना । (एक मिनिट का मदरसा)

क़ायदे की १३ (तेरा) सुन्नतें

(१) सीधे पैर को खडा रखना और उलटे पैर को बिछाकर उस पर बैठना और सीधे पैर की उंगलियों को क़िबला की तरफ़ रखना (२) अत्तहियात में अशहदुअल्लाइलाहा पर शहादत की उंगली उठाना

और इल्लल्लाह पर झुका देना (३) दोनों हाथों को रानों पर रखना (४) कायदए अखीर में दुरुद शरीफ़ पढना (५) दुरुद शरीफ़ के बाद दुआए मासूरा वगैरा पढना (६) दोनों तरफ़सलाम फेरना (७) सलाम की इबतिदा सीधे तरफ़ से करना (८) इमाम सलाम फेरते वक्त निय्यत करले मुक्तदियों की फरिश्तों की और नेक जिन्नातों की (९) मुक्तदी सलाम करे इमाम को फरिश्तों और सॉलेह जिन्नात और दाएँ बाएँ मुक्तदियों की निय्यत करना (१०) अकेले नमाज़ पढने में सिर्फ फ़रिश्तों की निय्यत करना (११) मुक्तदी का इमाम के साथ सलाम फेरना (१२) दूसरे सलाम की आवाज़ को पहले सलाम की आवाज से पस्त करना (१३) जिस की रकअत छूट गई हो इमाम के फ़ारिग होने का इन्तेज़ार करना ।

नोट : तफ़सीली मालूमात के लिए मसाएले नमाज़

मौलाना रफ़अत क़ासमी साहब की बिस्मिल्लाह बुकडिपो, जलगांव खां. से हासिल करें ।

फायदा: सुन्नतों के छूट जाने से न नमाज़ फ़ासिद होती है और न सजदए सहू वाजिब होता है । लेकिन क़सदन किसी सुन्नत को छोड देना मलामत का मुसतहक़ होता है और सवाब में भी कमी आजाती है, नमाज़ की मुकम्मल सुन्नतों के अलावा जो जो हरकत है या जो कुछ पढना है उस में से बाज़ वाजिब हैं बाज़ फ़र्ज़ हैं यह सुन्नतें बहवाला (मौलाना अब्रारुलहक़ हरदोई , एक मिनट का मदरसा दूसरी किताब तोहफ़तुलबनात मौलाना जलील अहमद आलमगीर क़ासमी)

मकरुहाते नमाज़

नमाज़ में २८ (अठ्ठाईस) बातें मकरुह हैं ।

(१) सदल यानी कपडे लटकाना यानी चादर सर

पर डाल कर उस के दोनों किनारे लटकादेना। (२) कपडों को मिट्टी से बचाने के लिए हाथ रोकना या समेटना (३) अपने कपडों या बदन से खेलना (४) मामूली कपडों में जिन्हें पहन कर मजमअ में जाना पसंद नहीं किया जाता है उन कपडों में नमाज़ पढना (५) मुंह में रुपिया या पैसा या और कोई चीज़ रखकर नमाज़ पढना (६) सुसती और लापरवाही की वजह से नंगे सर नमाज़ पढना (७) पाखाना या पेशाब की हाजत होने की हालत में नमाज़ पढना (८) बालों को सर पर जमा करके चुट्टा बांधना (९) कंकरियों को हटाना लेकिन अगर सजदा करना मुश्किल हो तो एक मर्तबा हटाने में मुज़ाएक़ा नहीं (१०) उंगलियाँ चटखाना या एक हाथ की उंगलियाँ दूसरे हाथ की उंगलियों में डालना (११) कमर या कूल्हे पर हाथ रखना (१२) किबला की तरफ़ से

मुंह फेरकर या सिर्फ़ निगाह से इधर उधर देखना (१३) कुत्ते की तरह बैठना यानी रानें खडी करके बैठना और रानों को पेट से और घुटनों को सीने से मिला लेना और हाथों को ज़मीन पर रख लेना (१४) सजदे में कलाइयाँ कोहनियों को ज़मीन पर टेकना मर्द के लिए मकरूह है (१५) किसी ऐसे आदमी की तरफ़ नमाज़ पढनाजो नमाज़ी की तरफ़ मुंह करके बैठा हो (१६) हाथ या सर के इशारे से सलाम का जवाब देना (१७) बिला उज़्र चार ज़ानू आलती पालती मारकर बैठना (१८) कसदन जमाई लेना या रोक सकने की हालत में न रोकना (१९) आँखों को बंद करलेना, लेकिन अगर नमाज़ में दिल लगाने के लिए बंद करें तो मकरुह नहीं (२०) इमाम का महराब के अंदर खडे होना लेकिन अगर क़दम महराब से बाहर हों तो मकरुह नहीं .

(२१) अकेले इमाम का एक हाथ उँची जगह पर खडा होना और अगर उस के साथ कुछ मुक्तदी

भी हों तो मकरुह नहीं है (२२) ऐसी सफ़ के पीछे अकेले खड़े होना जिस में जगह खाली हो (२३) किसी जानदार की तसवीर के कपडों में नमाज़ पढना (२४) ऐसी जगह नमाज़ पढना कि नमाज़ी के सर के उपर या उसके सामने या दाएँ बाएँ कोई जानदार की तसवीर हो (२५) कोई दुआ वगैरा उंगलियों पर शुमार करना (२६) चादर या और कोई कपडा इस तरह लपेट कर नमाज़ पढना कि जल्दी से हाथ न निकल सके (२७) नमाज़ में अंगडाई लेना (२८) अमामा के पेच पर सजदा करना । (बहवाला तालीमुलइसलाम)

ख़ुज़ूअ व ख़शूअ

कुरआने करीम में जहाँ जहाँ अक़ामिस्सलॉत और युक़ीमुनस्सलॉत आया हे कि नमाज़ का क़ायम करना हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास

(रजि) फ़रमाते हैं कि नमाज़ कायम करने से मुराद यह है कि उस के रुकूअ और सजदा को अच्छी तरह से अदा करना, हमातन मुतवज्जह रहे, खुशुअ के साथ पढे, हज़रत क़तादा (रजि) से भी यही नक़ल किया गया है कि नमाज़ का क़ायम करना और उसके अवक़ात की हिफ़ाज़त करना और वुज़ू का रुकूअ और सजदे का अच्छी तरह अदा करना। हदीसे नबी अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इरशाद है कि बदतरीन चोरी करने वाला वह शख्स है जो नमाज़ में भी चोरी करले। सहाबा (रजि) ने अर्ज किया या रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नमाज़ में किस तरह चोरी करेगा। आप ने इरशाद फ़रमाया कि नमाज़ में रुकूअ और सजदा अच्छी तरह से न करना नमाज़ की चोरी है। हक़ तआला शानहू उस नमाज़ की तरफ़ तवज्जोह

ही नहीं फरमाते जिस में रुकूअ और सजदा अच्छी तरह से न किया जाए। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इरशाद है कि आदमी ६० बरस तक नमाज़ पढते रहता है मगर एक नमाज़ भी कुबूल नहीं होती कि कभी रुकूअ अच्छी तरह नहीं करता तो कभी सजदा पूरा नहीं करता । हज़रत मुजद्दिद अल्फ़ सानी नव्वरल्लाहु मरक़दुहू ने फ़रमाया है कि सजदे में हाथों की उंगलियों को मिलाने का रुकूअ में उंगलियों को अलाहिदा अलाहिदा करने का भी एहतिमाम ज़रूरी है ।शरीअत ने उंगलियों को मिलाने और खोलने का हुक्म भी बेफायदा नहीं फ़रमाया ।(फ़ज़ाएले आअमाल)

नज़र कब और कहाँ

नमाज़ में खडे होने की हालत में सजदे की

जगह निगाह जमाना और रुकूअ की हालत में पैरों पर निगाह रखना और सजदे में नाक पर निगाह रखना और बैठने की हालत में गोद में रखना यह सब चीज़ें नमाज़ में ख़ुशूअ पैदा करती हैं इस से नमाज़ में दिलजमई नसीब होती है, जब ऐसे मामूली आदाब व सुन्नतों की रिआयत तुम खुद ही समझ लो कि किस कद्र फायदा बख्श होंगे ।

नमाज़ों के नाम व रकअतें

तमाम मसलमान मर्द और औरत्तों पर दिन रात में पाँच वक्त की नमाज़ पढना फ़र्ज़ है । (१) नमाज़े फज्र (२) नमाज़े ज़ोहर (३) नमाज़े अस्र (४) नमाज़े मगरिब (५) नमाज़े इशा । फ़ज्र की नमाज़ चार रकअत है, २ रकअत सुन्नत २ रकअत फ़र्ज । जोहर की नमाज़ १२ रकअत है , ४ रकअत

सुन्नत , ४ रकअत फ़र्ज़ , २ रकअत सुन्नत और २ रकअत नफ़िल । अस्र की नमाज़ ८ रकअत है , ४ रकअत सुन्नत,४ रकअत फ़र्ज़ । मग़रिब की नमाज़ ७ रकअत है, ३ रकअत फ़र्ज़, २ रकअत सुन्नत, २ रकअत नफ़िल । इशा की नमाज़ १७ रकअत है, ४ रकअत सुन्नत, ४ रकअत फ़र्ज़, २ रकअत सुन्नत, २ रकअत नफ़िल, ३ रकअत वित्र, २ रकअत नफ़िल । जुमआ की नमाज़ १४ रकअत है, ४ रकअत सुन्नत, २ रकअत फ़र्ज़, ४ रकअत सुन्नत, २ रकअत सुन्नत और २ रकअत नफ़िल ।

नमाज़ की ज़ाहिरी शक्ल और उनके मतालिब

तकबीरे तहरीमा	अल्लाहुअकबर कहना
क़याम	खडे होना
रुकूअ	घुटनेपर हाथ रखकर झुकना

क़वमा — रुकूअ से सीधा खडा होना
सजदा — ज़मीन पर माथा टेकना
जलसा — दो सजदों के बीच बैठना
सलाम फेरना — दाएँ बाएँ गर्दन घुमाना
दुआ — दोनों हाथ खुदा के सामने फैलाना

किसको क्या कहते हैं ?

सुब्हाना कल्लाहुम्मा को सना कहते हैं।
अलहम्दु की सूरत को सुरए फातेहा कहते हैं।
कुलहुवल्लाह की सुरत को सुरए इखलास
सुब्हाना रब्बियल अज़ीम को रुकूअ की तसबीह
समिअल्लाहुलिमनहमिदा को तसमीअ कहतेहैं।
रब्बनालकलहम्द को तहमीद कहते हैं।
सुब्हाना रब्बियलआला को सजदे की तसबीह
अत्तहियात को तशह्हुद कहते हैं
अल्लाहुम्मा सल्लीअला को दुरुद शरीफ़

अल्लाहुम्मा इन्नी ज़लम्तु को दुआए मासूरा
अल्लाहुम्मा इन्ना नसतईनुका को दुआए कुनूत

सजदए तिलावत

सजदए तिलावत से बहुत से मर्द व औरतें गा़फ़िल हैं , याद रखिए सजदे की आयत पढने या सुन्ने से सजदए तिलावत वाजिब हो जाता है चाहे मद्र हो या औरत । हन्फ़ी मसलक के एअतबार से पूरे कुरआने शरीफ़ में कूल १४ (चौदा) सजदे हैं और हर जगह सजदे की निशानदेही ही गई है। कुरआने शरीफ़ खोल कर देख लीजिए ।

मसअला : एक ही ज़गह बैठ क़र एक ही सजदा की आयत बार बार कई दफ़अ पढी गई या सुनी गई तो सिर्फ़ एक ही सजदा करना वाजिब होगा और अगर जगह बदल गई और फिर उसी सजदे वाली आयत को पढे तो दोबारा सजदा करना

वाजिब है और एक ही जगह बैठ कर मुख़तलिफ़ सजदे की आयतें पढी गई तो जितनी सजदे वाली आयतें होंगी उतने ही सजदे करना होगा। कोई बुलन्द आवाज़ से तिलावत कर रहा हो और दरमियान में सजदा की आयत आजाए तो उसे आहिसता आवाज़ में पढले ताके किसी के सुन्ने में तकलीफ़ न हो या फिर पढने के बाद सुन्ने वालों को बतादें कि मैं ने सजदा की आयत पढी थी आप लोगों ने भी सुनी होगी आप भी सजदा कर लें। सजदा की आयत पढकर या सुनकर फ़ौरन सजदा कर लेना बेहतर है अगर उस वक्त न किया और बाद में किया तब भी कोई भी हर्ज नहीं है मगर जियादा ताखीर करना मकरुह है (हवाला मसाएले सजदए तिलावत) और सजदे की आयत पढकर या सुनकर सजदा ही न किया तो गुनाह लाज़िम होगा और वाजिब सर पर

रहेगा जबतक सजदा अदा न करले ।

तरीक़ए सजदए तिलावत

सजदए तिलावत का आसान और अफ़ज़ल तरीक़ा यह है कि सजदए तिलावत की निय्यत से क़िबला की तरफ़ मुंह करके सीधा खडा होजाए । बगैर हाथ उठाए हुए और बगैर हाथ बांधे हुए अल्लाहु अकबर कहता हुवा सीधा सजदे में चले जाएँ ओर ३ मर्तबा सजदे की तसबीह पढकर अल्लाहु अकबर कहते हुए सीधा उठ खडे होजाएँ बस सजदए तिलावत अदा हो गया, नमाज़ों की तरह २ सजदे करने की ज़रुरत नहीं ।

तरीक़ए नमाज़े वित्र

वित्र की नमाज़ ३ (तीन) रकअत है जो कि वाजिब

है निय्यत करके हाथ बांध ले और दसतूर के मुताबिक़ बराबर 2 रकअत पूरी करके कायदे में अत्तहिय्यात पढकर तीसरी रकअत के लिए खडे हो तो अलहम्दु ओर कोई भी सूरत पढनेके बाद और रुकूअ में जाने से पहले अल्लाहु अकबर कहते हुए कानों तक हाथ उठाएँ और फिर बांध लें फिर दुआए कुनूत पढकर रुकूअ करें बाकी नमाज़ हस्बे दसतूर पूरी करें ।

नोट : दुआए कुनूत का पढना वाजिब है ।

मसअला : अगर दुआए कुनूत पढना भूल जाए तो सजदए सहू करना वाजिब है । दुआए कुनूत का याद करना ज़रुरी है जब तक याद न हो तो यह दुआ पढ लिया करें ।

रब्बना आतिना फिद् दुनिया हासानतवं व फिल आखिरती हासानतवं व किना अज़ाबन्नार .

और यह भी याद न होतो

अल्लाहुम्मा मगफीरली तीन मर्तबा पढे। बहवाला इल्मुलफ़िक़ा पेज नंबर 40 जिल्द 3, किताबुल फ़िक़ा जिल्द अव्वल पेज नं.533, बाकी दुआए कुनूत को जल्द अज़ जल्द सीख लें ।

फ़र्ज़ नमाज़

पाँचों वक्त जमात के साथ जो नमाज़ होती है फ़र्ज़ है । इमाम पाँचों वक्त सिर्फ फ़र्ज़ नमाज़ पढाता है अगर किसी की फ़र्ज़ नमाज़ जमाअत से छूट जाए तो वह अपनी तन्हा फ़र्ज़ नमाज़ अदा करे तीन या चार रकअत की अगर निय्यत होतो तर्तीब के मुताबिक 2 रकअत पूरी करे और जब तीसरी और चौथी रकअत पढे तो उसमें सिर्फ अलहम्दु की सुरत पढे । फ़र्ज़ की तीसरी और चौथी रकअत में कोई दूसरी सुरत न मिलाए आंम तौर से लोग उसे भरी हुई और खाली कहते

हैं । खाली से मुराद सिर्फ सूरए फ़ातिहा और भरी हुई से मुराद अलहम्दु के साथ कोई भी सुरत, यह मसअला सिर्फ़ ३ या ४ रकअत वाली फ़र्ज़ नमाज़ का है और वह भी तन्हा अगर पढ रहे हों तब ।

जमाअत से नमाज़ की तरतीब

जब भी जमाअत से नमाज़ अदा करे इमाम के साथ ही अल्लाहु अकबर कहते हुए निय्यत बांध ले और फ़ौरन सना पढकर खामूश हो जाए और इमाम की किरअत गौ़र से सुने कुछ न पढे । इमाम जब वलज़्ज़ॉल्लीन कहे तो आहिस्ता से आमीन कहे और अगर इमाम की किरअत शुरु होने के बाद जमाअत में शामिल हुवा तो सना पढने की ज़रुरत नहीं बलके निय्यत बांधकर किरअत सुन्ने में लग जाए और अगर एक रकअत

या चंद रकअत होने के बाद जमाअत में शामिल हुवा तब भी निय्यत करके जिस हालत में जमाअत को देखो उसी हालत में मिल जाओ और जमाअत के बाद जब अपनी छोडी हुई रकअत पूरी करने के लिए खडे हों तो सब से पहले सना पढो बाकी नमाज़ हस्बेदसतूर अदा करें । मसाएल हन्फ़ी मसलक के एअतबार से हैं । (बहवाला मसाएले नमाज़ मौलाना रफ़अत क़ासमी) बिस्मिल्लाह बुक डेपो. ज़लगांव खां. से हासिल करें ।

नमाज़े जनाज़ा

जनाज़े की नमाज़ फ़र्ज़े किफ़ाया है जिस का मतलब यह है कि चंद लोग मिल कर भी अगर पढलें तो सब की तरफ़ से फ़र्ज़ अदा हो जाएगा और अगर कोई भी न पढे तो सब गुनहगार होंगे । जनाज़ा की नमाज़ में जितने ज़ियादा लोग होंगे उतनी

ही मय्यत के लिए दुआए मग़फ़िरत होगी लेकिन अफ़सोस है इस बात पर कि बाप की नमाज़े जनाज़ा हो रही है बीवी की नमाज़े जनाज़ा हो रही है तो शवहर और बेटा एक तरफ़ बैठा हुवा है और कहीं बेटे की नमाज़े जनाज़ा हो रही है तो बाप एक तरफ खडा हुवा है कितनी जिहालत है कि घर की मय्यत है और घर वाले ही पूरे के पूरे नमाज़े जनाज़ा में शामिल नहीं हैं। बज़बाने हाल यहं कह रहे हैं कि तुम हमारी मय्यत के लिए दुआए मग़फ़िरत करो हम करने को तय्यार नहीं। अफ़सोस सद अफ़सोस।

नमाज़े जनाज़ा के फ़राएज़

जनाज़े की नमाज़ में २ (दो) फ़र्ज़ हैं।

(१) ४ मरतबा तकबीर यानी अल्लाहु अकबर कहना (२) क़याम में खडे होना।

नमाज़े जनाज़ा की सुन्नते :

(१) सना पढना (२ दुरूद शरीफ़ पढना (३) दुआ पढना। बहवाला आइनए नमाज़ आशिके इलाही

नमाज़े जनाज़ा का तरीक़ा

नमाज़े जनाज़ा के लिए हाज़िरीन की तअदाद देख कर तीन, पाँच, सात, ग्यारह सफ़ें बनाई जाएँ और खास तौर से अपने चप्पल या जूते को पैरों से निकालकर अलग कर दें बाज लोग पांव में से निकाल कर उसी पर पांव रख लेते हैं जो कि गलत है और आदाब के खिलाफ़ है। सफ़ें दुरुस्त होने के बाद इस तरह निय्यत करें। निय्यत करता हूँ मैं नमाज़े जनाज़ा पढने की, खास वासते अल्लाह तआला के दुआए मगफ़िरत मय्यत के लिए पीछे इस इमाम के मुंह मेरा कअबा शरीफ़ की तरफ़, फिर इमाम ज़ोर से और मुक्तदी

आहिस्ता से तकबीर कहें और दोनों हाथ कानों तक उठाकर नाफ़ के नीचे बांध लें और इमाम व मुक्तदी सब आहिस्ता आहिस्ता सना पढ़ें ।

सुब्हानकल्लाहुम्म व बिहम्दि-क व तबारकस्मु-क त तआला जद्दु-क व जल्ल सनाउ-क वला इला-ह गयरुक.

इस सना में निशान दिया हुवा लफ़्ज़ ज़ियादा है दीगर नमाज़ की सना के मुक़ाबिल ओर यही सना मर्द, औरत, बच्चा सब की नमाज़े जनाज़ा में पहली तकबीर के बाद पढी जाती है । दूसरी तकबीर में बगै़र हाथ उठाए अल्लाहु अकबर कहें और दुरूदे इब्राहीम पढें और तीसरी तकबीर में बगैर हाथ उठा हुए अल्लाहु अकबर कहें और बालिग़ मर्द या औरत का जनाज़ा हो तो यह दुआ पढे ।

अल्लाहुम्मग्फिर लिहय्यिना व मय्यितिना व शाहिदिना व ग़ाइबिना व सग़ीरिना व कबीरिना व ज़-करिना व उन्साना, अल्लाहुम्म मन अह्ययतहू मिन्ना फ-अहयिही अ़लल इस्लाम, वमन तवफ्फय्तहू मिन्ना फ-तवफ्फत्हु अ़लल ईमान.

फिर चौथी तकबीर में बग़ैर हाथ उठाए हुए अल्लाहु अकबर कहें उस के बाद दोनों तरफ़ सलाम फेरदें नमाज़ से फ़ारिग़ होते ही जनाज़ा उठाकर चलें। नोट : नमाज़ के बाद जनाज़े के सामने हाथ उठाकर दुआ मांगना कहीं भी मनक़ूल नहीं है । दुआ नमाज़ के अंदर हो चुकी हे।(अहकामे मय्यत)

मय्यत नाबालिग़ लड़का

जनाज़ा अगर नाबालिग़ लडके का हो तो तीसरी तकबीर के बाद यह दुआ पढें ।

अल्लाहुम्मज्अल्हा लना फ-रतंव वज्अल्हा लना अजरंव व ज़ुख़रंव वज्अल्हा लना शाफिअतंव व मुशफ्फअह।

मय्यत नाबालिग लड़की

जनाज़ा अगर नाबालिग लडकी का हो तो तीसरी तकबीर के बाद यह दुआ पढें ।

अल्लाहुम्मज्अल्हा लना फ-रतंव वज्अल्हा लना अजरंव व ज़ुख़रंव वज्अल्हा लना शाफिअतंव व मुशफ्फअह।

नोट : नमाज़े जनाज़ा पढने की तर्तीब व तरकीब वही है जो तरीक़ा नमाज़ में बताई गई है । अलबत्ता लडकी और लडके में सिर्फ़ दुआ का फ़र्क़ है जो तीसरी तकबीर के बाद पढी जाती है जैसा कि उपर ज़िक्र कर दिया गया है ।

क़ब्रस्तान में दाख़िल होने की दुआ

जैसेही क़ब्रस्तान में दाख़िल हो तो यह दुआ पढ़े

अस्सलामु अलय्कुम या अह्लल कुबूरि
यग़फिरुल्लाहु लना व लकुम अन्तुम
स-लफुना व नह्नु बिल अस्र.

मिट्टी देने की दुआ

मय्यत को कब्र में रखने के बाद दोनों हाथों से पस भर भर कर 3 मर्तबा मिटटी डाले और यह दुआ पढे । पहली बार मिन्हा ख़लक़नाकुम पढ़ें दुसरी बार में वफीहा नुईदुकुम और तीसरी बार में वमिन्हा नुख़रिजुकुम तारतन उखरा
नोट : आम तौर पर बाज़ जगह मय्यत को क़ब्र में रखने के बाद थोडी थोडी मिट्टी सब लोगों

के हाथ से एक टोकरी में जमा करते हैं उस पर क्या पढते नहीं पढते, वल्लाहु आलम फ़िर वह सब को जमा की हुई मिट्टी मय्यत के सिरहाने डालते हैं जिस को कुल के ढेले कहते हैं इस का कहीं सबूत नहीं, बेअसल बात है ।

नमाज़े ईदैन का तरीक़ा

रमज़ानुलमुबारक की ईद को ईदुलफ़ित्र और बक़र ईद को ईदुलअज़हा कहते हैं । नमाज़े ईदैन अदा करने की बिलकुल आसान तर्तीब व तरकीब, सब से पहले निय्यत इस तरह करें कि निय्यत करता हूँ मैं दो रकअत नमाज़े वाजिब ईदुल फ़ित्र की या ईदुलअज़हा की छः ज़ाएद तकबीरों के साथ पीछे इस इमाम के वास्ते अल्लाह तआला के मुंह मेरा तरफ़ कअबा शरीफ़ के अल्लाहु अकबर

कहते हुए कानों तक हाथ उठाएँ और फिर बांध लें फिर सना पढें फिर उस के बाद अल्लाहु अकबर कहते हुए कानों तक हाथ उठाएँ और नीचे छोडदें इसी तरह दूसरी मर्तबा अल्लाहु अकबर कहते हुए कानों तक हाथ उठाएँ और छोडदें फिर तीसरी मर्तबा अल्लाहु अकबर कहते हुए कानों तक हाथ उठाएँ और बांध लें फिर इमाम सुरए फ़ातेहा और कोई सुरत पढे ग़ौर से सुनते रहें। रुकूअ और सजदा होने के बाद जब दुसरी रकअत के लिए खडे हों तो फिर सुरए फ़ातेहा और सूरत पढने के बाद रुकूअ में जाने से पहले तकबीरें होंगी तो पहली तकबीर में अल्लाहु अकबर कहते हुए कानों ताक हाथ उठाएँ और छोडदें इसी तरह दूसरी तकबीर में अल्लाहु अकबर कहते हुए कानों तक हाथ उठाएँ और छोडदें इसी तरह तीसरी तकबीर में अल्लाहु अकबर कहते हुए कानों तक

हाथ उठाएँ और छोड दें और चौथी तकबीर में बग़ैर हाथ उठाए हुए अल्लाहु अकबर कहते हुए रुकूअ में चले जाएँ । बाकी नमाज़ हस्बे दस्तूर अदा करें। नोट : नमाज़ अदा करने के बाद ईद का खुतबा सुन्ना ज़रूरी है ख़ुतबा के दौरान बातें करना या ख़तबा छोडकर चले जाना यह सब खिलाफ़े शरअ काम हैं इस का ख्याल रखें ।

तकबीरे तशरीक़

اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ

اَللّٰهُ اَكْبَرُ وَلِلّٰهِ الْحَمْدُ ط

अल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर लाइलाहा इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर व लिल्लाहील हम्द

इन अलफ़ाज़ का ईदुलफ़ित्र की नमाज़ को जाते हुए आहिस्ता आवाज़ में और इज़ुलअज़हा की नमाज़ को जाते हुए थोडी भीनी भीनी आवाज़ में पढना मुसतहब है (तालीमुलइसलाम) इस के अलावा 9 जिलहज्जा की फ़ज्र से लेकर 13

जिलहज्जा की अस्त्र तक हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद बुलन्द आवाज़ से एक मर्तबा पढना वाजिब है । औरतों के लिए भी वाजिब है मगर औरतें आहिस्ता आवाज़ में पढें ।(बेहेश्ती ज़ेवर, तालीमुलइसलाम) तफ़सीली मालूमात के लिए मौलाना रफ़अत साहब की मसाएले ईदैन, बिस्मिल्लाह बुकडेपो जलगांव से हासिल करें । 9823986512

नमाज़े क़सर

मुसाफ़िर के लिए नमाज़े कस्र है जो शख्स 48 मील या 72 किलो मीटर के सफ़र के इरादे से निकल पडे और सफ़र 15 दिन के अंदर अंदर का है तो वह ज़ोहर अस्र और इशा की फ़र्ज़ नमाज़ को बजाए 4 रकअत के सिर्फ 2 रकअत पढे और मुक़ीम इमाम के पीछे अदा करे तो पूरी पढे । बाकी तफ़सीली मालूमात के लिए मौलाना रफअत

क़ासमी की मसाएले सफ़र का मुतालआ करें ।

अज़ान के बाद की दुआ :

اَللّٰهُمَّ رَبَّ هٰذِهِ الدَّعْوَةِ التَّامَّةِ وَالصَّلٰوةِ الْقَائِمَةِ اٰتِ سَيِّدَنَا مُحَمَّدَانِ الْوَسِيْلَةَ وَالْفَضِيْلَةَ وَالدَّرَجَةَ الرَّفِيْعَةَ وَابْعَثْهُ مَقَامًا مَّحْمُوْدَانِ الَّذِيْ وَعَدْتَّهٗ وَارْزُقْنَا شَفَاعَتَهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ اِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِيْعَادَ

मुख़्तसर सीरते पाक

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

हमारे पैग़ंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मक्का मुअज़्ज़मा में पैदा हुए थे । हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का नामे मुबारक मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम है । हमारे नबी

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के वालिद का नाम अब्दुल्लाह है । हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वालिदा का नाम बीबी आमेना है । हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उम्रे मुबारक 63 साल थी । आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम 53 साल मक्का में रहे फिर खुदा के हुक्म से मदीना मुनव्वरा हिजरत फरमाई । 10 साल मदीना मुनव्वरा में रहे । अल्लाह पाक तमाम मुसलमानों की तरफ़ से आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अपनी शायाने शान बदला नसीब फरमा आमीन और बेशुमार रहमतों और बरकतों के दरवाज़े हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर खोल दे ।

आमीन

माँ के पांव तले अगर जन्नत है तो बाप जन्नत का दरवाज़ा है ।

कुरबानी की दुआ और तरीक़ए कुरबानी

कुरबानी के जानवर को क़िबला रुख लिटाए उस को पहले से छुरी न दिखाए और अपने दिल में नियत करे कि या अल्लाह मैं सच्चे दिल से अपनी तरफ़ से जानवर तेरे नाम पर कुरबान कर रहा हूँ । पस तू अपने फ़ज़्ल से कुबूल फ़रमा आमीन ,
नोट : कुरबानी के जानवर में जो जो शरीक हों वह यही नियत करें फिर यह दुआ पढे

اِنِّیْ وَجَّهْتُ وَجْهِیَ لِلَّذِیْ فَطَرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ حَنِیْفًا وَّمَا اَنَا مِنَ الْمُشْرِکِیْنَ اِنَّ صَلَاتِیْ وَنُسُکِیْ وَمَحْیَایَ وَمَمَاتِیْ لِلّٰہِ رَبِّ الْعَالَمِیْنَ لَاشَرِیْکَ لَہٗ وَبِذٰلِکَ اُمِرْتُ وَاَنَا مِنَ الْمُسْلِمِیْنَ اَللّٰھُمَّ مِنْکَ وَلَکَ بِسْمِ اللّٰہِ وَاللّٰہُ اَکْبَرْ۔

इन्नी वज्जहतु वजहिया लिल्लज़ी फतरस-समावाती वल अरज़ा हनिफवं व मा अना मिनल मुशरिकीन इन्ना सलाती व नुसुकी व माहयाया व ममाती लिल्लाही रब्बील आलामिन ला शरीका लहु व बी ज़ालिका उमीरतु व अना मिनल मुसलेमीन अल्लाहुम्मा मिनका व लका बिस्मिल्लाही अल्लाहु अकबर .

पढ कर ज़ुबह कर दे ज़ुबह के बाद अपनी तरफ़ से कुरबानी अगर है तो इस तरह कहे

अल्लाहुम्मा तकब्बलहु मिन्नी कमा तकब्बलता मिन खलिलीका व हबीबीका इब्राहीम अलैहिस्सलाम

اَللّٰهُمَّ تَقَبَّلْهُ مِنِّی كَمَا تَقَبَّلْتَ مِنْ خَلِيْلِكَ وَحَبِيْبِكَ اِبْرَاهِيْمَ عليه السلام

और अगर किसी दूसरे के नाम से हो तो लफ़्ज़ مِنِّی की जगह مِنْ फिर नाम ले , फ़लाँ बिन फुलाँ, जिस जिस का नाम हो ।

(बहवाला मौलाना आशिके इलाही,आसान नमाज़)

नोट : अगर हो सके तो खुद अपने हाथ से ज़ुबह करे अगर किसी दुसरे से कराए तो सामने खडे रहे और दुआ करते रहे, छुरी जैसे ही चले तो सब बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अकबर कहें । बाक़ी तफ़सीली मालूमात मौलाना रफ़अत क़ासमी की किताब मसाएल कुरबानी में देखें ।

अगर किसी के दिल में अपने लिये मुहब्बत पैदा करना चाहो तो उसको पूरे नाम से पुकारो।

दुआए हमबिस्तरी

जिस वक्त बीवी से हमबिस्तरी करने का इरादा हो तो ये दुआ पढे :

بِسْمِ اللّٰهِ، اَللّٰهُمَّ جَنِّبْنَا الشَّيْطٰنَ وَجَنِّبِ الشَّيْطٰنَ مَا رَزَقْتَنَا۔

बिस्मिल्लाहि, अल्लाहुम्म जन्निब्नश शय्ता-न व जन्निबिश शय्ता-न मा रज़क्तना.

नोट : इस दुआ को सोहबत से पेहले ज़रूर पढना चाहिये क्युंकि हमबिस्तरी के वक्त अल्लाह का नाम न लेने से शैतान का नुत्फा भी मर्द के नुत्फे के साथ अंदर चला जाता है।(कज़ा फी हाशियतुल हिस्न)

चार आस्मानी किताबें

(१) तौरैत हज़रत मूसा (अलै.) पर नाज़िल हुई.

(२) ज़बूर हज़रत दाऊद (अलै.) पर नाज़िल हुई.

(३) इन्जील हज़रत ईसा (अलै.) पर नाज़िल हुई.

(४) कुर्आन शरीफ हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर नाज़िल हुई.

औरतों की नमाज़ का तरीका

नमाज़ पढने का जो तरीका बताया गया उसमें जो भी कुछ पढने का हुक्म मर्द को है वह ही पढने का हुक्म औरतों को भी है, पढनेमें कोई फर्क नहीं है। अल्बत्ता हरकतों में फर्क है, उसे ज़हन में रख कर नमाज़ अच्छी बनाओ। अव्वल नमाज़ के लिये किबले की तरफ मुंह करके सीधे खडे हो जाओ, दोनों पांव बिल्कुल करीब करीब रहें और दोनों अंगूठे बिल्कुल सामने किब्ले की तरफ रहें, पांव फैला कर और तिरछे पांव न करें। निय्यत करने के बाद अपने दोनों हाथ कंधों तक उठाएं, उंगलियां मिली हुई,हथेली किब्ले की तरफ, "अल्लाहु अकबर" केहते हुवे सीने पर हाथ बांध ले. सीधी हथेली बाएं हथेली की पुश्त पर रख्खे. रूकूअ में सिर्फ इतना झुके कि घुटनों तक हाथ पहोंच जाए और उंगलियां मिला कर रख्खे। सजदे कीहालत में पेट रानों से, बाज़ू बगल से मिलाए और कोहनियां ज़मीन पर टिकी हुई हों और दोनों पांव दाहिनी तरफ निकाल दे। और कअदा में बैठने की हालत में

दोनों पांव दाहिनी तरफ निकाल कर दोज़ानू बैठे। औरतें किसी भी नमाज़ में बलंद आवाज़ से कुर्आन न पढें बल्के आहिस्ता आवाज़ से पढें. (आसान नमाज़ अज़ मौलाना आशिक इलाही)

खल्वते शबे अव्वल

जिस वक्त बीवी के साथ पेहली बार खल्वत करे, पेहली मुलाकात में बात करने से पेहले कहे :

"अस्सलामु अलय्कुम व रह्मतुल्लाह"

"तुम प अल्लाह की सलामती और रहमत हो", फिर औरत की पेशानी और उसके बालों पर हाथ रख कर ये दुआ पढे :

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ مِنْ خَیْرِهَا وَخَیْرِ مَا جَبَلْتَهَا عَلَیْهِ وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّهَا وَشَرِّ مَا جَبَلْتَهَا عَلَیْهِ۔ (مشکوٰۃ ابن ماجہ)

"अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलु-क मिन ख़य्रिहा व ख़यरि मा जबल्तहा अलय्हि व अऊज़ु बि-क मिन शर्रिहा व शर्रि मा जबल्तहा अलय्हि."

चार मुकर्रब फरिश्तों के नाम और काम

(१) अव्वल हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम जो अल्लाह का पैग़ाम नबियों तक पहोंचाते थे।

(२) हज़रत मीकाईल अलैहिस्सलाम जो बारिश बरसाने और मख्लूक को रोज़ी पहोंचाने का काम करते हैं।

(३) हज़रत इज़राईल अलैहिस्सलाम जो रूह निकालने पर मुकर्रर हैं, इनको "मलकुल मौत" यानी मौत का फरिश्ता भी केहते हैं।

(४) हज़रत इसराफील अलैहिस्सलाम जो कयामत के दिन सूर फूंकेंगे।(तअलीमुल इस्लाम)

खुलफाए राशिदीन

(वो सहाबा जिनको अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दुनिया ही में जन्नत की बशारत दे दी थी)

(१) हज़रत अबूबकर सिद्दीक (रदि.)

(२) हज़रत उमर बिन खत्ताब (रदि.)

(३) हज़रत उस्मान बिन अफ्फान (रदि.)

(४) हज़रत अली बिन अबी तालिब (रदि.)
(५) हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह (रदि.)
(६) हज़रत जुबैर बिन अवाम (रदि.)
(७) हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ (रदि.)
(८) हज़रत अबू तल्हा (रदि.)
(९) हज़रत सअद बिन अबी वक्कास (रदि.)
(१०) हज़रत सईद बिन ज़ैद (रदि.)

नोट : पेहले चार सहाबा को "खुलफाए राशिदीन" कहा जाता है।